प्रतिबिम्ब

स्मारिका-2022

संरक्षक

डॉ.करुणा जोशी

प्राचार्य, सेठ मथुरादास बिनानी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नाथद्वारा

संपादक

माधव नागदा

सह संपादक

डॉ.वंदना जोशी

आवरण

डॉ. युगल किशोर शर्मा

रेखांकन

डॉ.वंदना जोशी

प्रकाशक

पूर्व विद्यार्थी समिति

सेठ मथुरादास बिनानी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नाथद्वारा

डॉ. सी.पी. जोशी

अध्यक्ष
राजस्थान विधान सभा

संदेश

अपार हर्ष का विषय है कि पूर्व विद्यार्थी परिषद् की कार्यकारिणी द्वारा एक स्मारिका "प्रतिबिम्ब" का प्रकाशन किया जा रहा है।

"एल्युमिनी समिति बिनानी कॉलेज, नाथद्वारा" के पूर्व विद्यार्थी अपनी संकल्पनाओं को बहुमुखी बना रहे है। महाविद्यालय की पावन स्थली को सभी "मातृ गृह" के रूप में जानते समझते हैं। **हमारे माता पिता ने शिक्षा के जो अमूल्य संस्कार दिये उन्हें पल्लवित होने का अवसर महाविद्यालय में मिला, शिखर पर पहुँचने का मार्ग भी तो यहीं से होकर जाता है।** महाविद्यालय से जुड़ी हुई अनेक स्मृतियाँ होती है। वे दुनिया में सबसे धनिक और भाग्यशाली होते हैं जिनके पास स्मृतियाँ शेष होती हैं। स्मृतियों में रची-बसी आत्मीयता और स्नेह की यह नदी बहती रहे, यही मेरी हार्दिक आकांक्षा है।

हमारी अस्मिता, गरिमा और सम्मान जैसे गंभीर मसलों को हल करने के लिए शिक्षा और वैचारिक अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का होना आवश्यक है। इस महाविद्यालय ने कई कीर्तिमान हासिल किये हैं। अब जरूरत यह है कि **"प्रतिबिम्ब" पत्रिका यहाँ के विद्यार्थियों के जीवन की अनकही अनछुई और अचिह्नित अनुभूतियों को शब्द प्रदान कर सके।** यह आशा भी है कि एक मजबूत, सुन्दर और विकासशील समाज रचना का आधार बने। "प्रतिबिम्ब" विशेषांक के माध्यम से सभी सदस्यों एवं पूर्व छात्रों को शुभकामनाएँ।

मैं पूर्व विद्यार्थी परिषद् की कार्यकारिणी द्वारा प्रकाशित की जा रही स्मारिका "प्रतिबिम्ब" के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाऐं प्रेषित करता हूँ।

(डॉ. सी.पी. जोशी)

दिया कुमारी

संसद सदस्य, लोकसभा
राजसमंद (राजस्थान)

सदस्य
- स्थायी समिति रेलवे
- राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण
- परामर्शदात्री समिति संस्कृति एवं पर्यटन मंत्रालय

संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई है कि सेठ मथुरादास बिनानी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नाथद्वारा के पूर्व छात्रों की एक समिति (Alumini) अपने सात वर्ष के कार्यकाल उपरांत अपनी सकारात्मक सोच रखते हुए, रचनात्मक कार्यों के लिए योगदान कर आपसी सहयोग एवं विश्वास द्वारा महाविद्यालय को मजबूत, सुंदर और अद्वितीय बनाने के लिए प्रयासरत है। इसी को दृष्टिगत रखते हुए समिति (Alumini) द्वारा **"प्रतिबिम्ब" स्मारिका के अंक** का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पुस्तक में मुद्रित आलेख, पूर्व छात्रों एवं प्रवक्ताओं के संस्मरण के साथ जो रचनाएं होंगी, वे समाज में प्रेम, सहयोग, परस्पर परिचय एवं आपसी सामंजस्य बनाये रखने के लिए प्रेरणादायी साबित होंगी।

मैं इस प्रशंसनीय कार्य के लिए समिति (Alumini) द्वारा **"प्रतिबिम्ब" स्मारिका** के सफल प्रकाशन के लिए मंगलकामना प्रकट करती हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

(दिया कुमारी)

इन्द्रवदन गिरनारा

श्रीजी के बडे मुखिया
श्रीनाथजी मन्दिर नाथद्वारा

निवासः मोतीमहल के नीचे,
चोपाटी रोड़, नाथद्वारा (राजसमन्द) 313301

संदेश

वर्तमान में मैं श्रीनाथजी के श्रंगार सेवा के मुखिया पद पर कार्यरत हूं। मैं महाविद्यालय का पूर्व छात्र भी रहा हूं। मैनें 1971-72 में यहां से विज्ञान में स्नातक किया था। इस कारण व्यक्तिगत रूप से यह संदेश लिखते वक्त मुझे अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। 1962 से आज तक से.म.बि. राज. स्ना. महाविद्यालय, नाथद्वारा शिक्षा के क्षेत्र में अपनी वृहद सेवाएं सतत् प्रदान कर रहा है। अब तक लाखों विद्यार्थी यहां से शिक्षा प्राप्त कर विविध क्षेत्रों में अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे है।

मैं पूर्व विद्यार्थी समिति बिनानी कॉलेज, नाथद्वारा के समस्त साथियों को इस बात के लिए बधाई देना चाहता हूं कि उनके अथक प्रयासों के परिणाम स्वरूप न केवल पूर्व विद्यार्थी समिति का गठन हुआ वरन यह पत्रिका भी अपना स्वरूप लेकर प्रकाशित हो रही है।

मेरी शुभकामनाएं है कि पूर्व विद्यार्थी समिति से.म.बि. राज. स्ना. महाविद्यालय, नाथद्वारा, राजसमंद निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे व पुनः ढेरो बधाई।

(इन्द्रवदन गिरनारा)

जितेन्द्र ओझा (R.A.S.)
मुख्य निष्पादन अधिकारी
नाथद्वारा मन्दिर मण्डल
नाथद्वारा (राज.)

संदेश

प्राचार्य,

सेठ मथुरादास बिनानी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

नाथद्वारा (राज.)

यह सूचना हृदय में असीम हर्ष का भाव संचारित करती है कि इस राजकीय महाविद्यालय, नाथद्वारा में एक पूर्व विद्यार्थी समिति का गठन हो चुका है।

मैं पूर्व विद्यार्थी समिति के सभी सदस्यों का स्वागत करता हूं, अत्यन्त स्नेह भाव से स्मरण करता हूं और सभी को सभी से जोड़ने वाली पत्रिका "प्रतिबिम्ब" के प्रकाशन ध्येय हेतु हार्दिक साधुवाद एवं बधाई प्रदान करता हूँ।

प्रभु श्रीनाथजी से मंगल कामना है कि पूर्व विद्यार्थी समिति बिनानी कॉलेज, नाथद्वारा इस महाविद्यालय के उन्नयन में अपनी प्रभावी भूमिका प्रस्तुत करेगी।

शुभकामनाओं सहित।

(जितेन्द्र ओझा)

डॉ. मोनिका रोत

कार्यवाहक प्राचार्य

से.म.बि.रा. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नाथद्वारा, राजसमंद

संदेश

यह सूचना हृदय में असीम हर्ष का भाव संचारित करती है कि बिनानी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय नाथद्वारा में पूर्व विद्यार्थी समिति गठित हो चुकी है। भारत और विश्व के अनेकानेक शिक्षण संस्थानों में पूर्व विद्यार्थी संगठन देखने को मिल जाते हैं। मैं पूर्व विद्यार्थी समिति एस.एम.बी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नाथद्वारा के उन समस्त शिक्षकों और एल्युमिनी को हार्दिक शुभकामनाएं देती हूं और उम्मीद करती हूं कि उनके द्वारा गठित पूर्व विद्यार्थी समिति महाविद्यालय के शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक गतिविधियों में सहयोग प्रदान कर विद्यार्थी हित में विकास को एक नया आयाम देने में सफल होगी और मैं शुभकामनाएं प्रेषित करती हूं कि पूर्व विद्यार्थी समिति की स्मारिका "प्रतिबिंब" का जो प्रकाशन होने जा रहा है, यह आगे भी सुचारू रहे। इस शुभ कार्य हेतू मैं उन्हें अनंत बधाई
देती हूं।

(डॉ. मोनिका रोत)

सुनील कुमार जोशी

छात्रसंघ अध्यक्ष 2022-23
से म बि रा महाविद्यालय नाथद्वारा, राजसमंद

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है कि पूर्व विद्यार्थी समिति बिनानी के माध्यम से 'प्रतिबिंब' स्मारिका का प्रकाशन हो रहा है। मैं इस वर्ष बिनानी महाविद्यालय छात्रसंघ अध्यक्ष घोषित हुआ हूँ। मैंने अपने कार्यकाल में छात्र हित एवं महाविद्यालय विकास हेतु स्थानीय विधायक एवं विधानसभाध्यक्ष डॉ. सी.पी.जोशी तथा भामाशाहों की सहायता से कई कार्य सम्पन्न करवाए हैं जिनमें नये विषय खुलवाना, ग्राउंड का समतलीकरण, महाराणा प्रताप की मूर्ति की स्थापना, पुस्तकालय ऑटोमेशन सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त मैने विद्यार्थियों के सहयोग से अपना एक दल बनाकर अध्ययन सामग्री उपलब्ध करवाने का कार्य भी आरंभ कर रखा है जो कि निर्धन एवं जरूरतमंद छात्र-छात्राओं के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है।

महाविद्यालय शिक्षा पूर्ण कर लेने के पश्चात मैं भी पूर्व विद्यार्थी समिति बिनानी का सदस्य बनकर कार्य करूंगा तथा मेरे साथियों को भी प्रेरित करूंगा कि वे भी इसके सदस्य बनकर भविष्य में महाविद्यालय हित में इस समिति के माध्यम से कार्य करें।

'प्रतिबिंब' हमारे कार्यों की छवि, हमारा अक्ष होगा अतः मैं इसके निरंतर होने की ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ और प्रयत्नशील रहूंगा कि यह स्मारिका प्रति वर्ष प्रकाशित होकर विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करती रहे। हार्दिक शुभकामनाएँ।

(सुनील कुमार जोशी)

अनुक्रम

आमुख	डॉ.करुणा जोशी, प्राचार्य	**9**
अपनी बात	शंकर मालवीय	**10**
संपादक की कलम से	माधव नागदा	**12**
प्रतिवेदन		
एल्युमिनी बिनानी: प्रगति के पथ पर	डॉ. युगलकिशोर शर्मा	**14**
संस्मरण		
यादों के गलियारे में चहलकदमी	डॉ.शिबन कृष्ण रैणा	**16**
आलेख		
बिनानी महाविद्यालय: एक विहंगम दृष्टि	डॉ.वंदना जोशी	**20**
पूर्व छात्र परिषद:महत्व, दशा और दिशा	घनश्याम वागरेचा	**23**
बढ़ती उम्र में हड्डियों और जोड़ों की बीमारियाँ	डॉ.बी.एल.कुमार	**25**
हम दीपावली क्यों मनाते हैं	चरन शर्मा	**27**
साहित्य		
संत वाणी (लघुकथा)	माधव नागदा	**32**
बिग बॉस (लघुकथा)	माधव नागदा	**33**
अतिथि कबूतर (लघुकथा)	राम पटवा	**34**
फुलझड़ियाँ		**35**
नई परिभाषा (कहानी)	अखिल नागदा	**38**
पिछवाई (कविता)	डॉ.वंदना जोशी	**43**
मात्र एक ज्योति (कविता)	डॉ. विनीता श्रीवास्तव	**47**
चित्र वीथी		**48**
अन्य		
एल्युमिनी बिनानी समिति सदस्य		**50**
स्थाई सदस्य एल्युमिनी बिनानी		**54**
अस्थाई सदस्य एल्युमिनी		**56**
बिनानी महाविद्यालय छात्र संघ कार्यकारिणी		**56**
कार्यकारिणी एल्युमिनी बिनानी समिति		**57**
जो हमसे बिछुड़ गए		**59**

आमुख

पूर्व विद्यार्थी समिति सेठ मथुरादास बिनानी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय के पूर्व विद्यार्थियों का संगठन है। यह समिति अपनी स्थापना के सात वर्ष पूर्ण करने जा रही है। किसी भी संस्था की स्थापना के प्रारम्भिक वर्ष चुनौती भरे होते हैं क्योंकि इस अवधि में संगठन अपना आधार बना रहा होता है। यह विचारों तथा कार्यक्रमों का परीक्षण काल होता है। वस्तुतः किसी भी भवन की सुदृढ़ता उसकी मजबूत नींव पर निर्भर करती है अतः इन सात वर्षों में पूर्व छात्र समिति कई परीक्षणों से गुजरते हुए सुदृढ़ता को प्राप्त कर चुकी है। मेरी मंगलकामना है कि यह भविष्य में विशाल वृक्ष का स्वरूप ग्रहण करे।

यह महाविद्यालय कई अर्थों में विशिष्ट है। यहाँ से शिक्षा प्राप्त विद्यार्थी वर्तमान में राजनैतिक, सामाजिक एवं प्रशासनिक पदों पर विराजमान हैं। मानसिक वैभव के साथ-साथ शारीरिक बल यहाँ के विद्यार्थियों की विशेषता रही है। राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर तक के खेलों मे यहाँ के विद्यार्थियों ने महाविद्यालय का परचम लहराया है। ऐसे ही पूर्व विद्यार्थियों द्वारा एल्युमिनी बिनानी समिति निर्मित है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि समिति बहुत ऊँचाइयाँ छूएगी।

समिति के सदस्य अपने हृदय में बिनानी महाविद्यालय की उन यादों को सहेजे हुए हैं जब मूल्य आधारित व्यवस्थाएँ थीं। किसी संस्था को सुदृढ़ बनाने और उसे आगे बढ़ाने के लिए मूल्यों का विशेष महत्व होता है। युग बदलने के साथ मूल्य भी बदलते हैं। महाविद्यालय की परम्पराओं को बनाए रखने के साथ-साथ नई पीढ़ी को हम अच्छे मूल्य दे सकें, उसका मार्गदर्शन कर सकें तो युवाओं के साथ ही महाविद्यालय का भविष्य भी उज्ज्वल हो जाएगा। पूर्व व वर्तमान विद्यार्थियों के मध्य संवाद बना रहना चाहिए क्योंकि वर्तमान में अध्ययनरत विद्यार्थी ही आने वाले समय में पूर्व छात्र समिति को आगे बढ़ाएंगे।

मैं 'प्रतिबिंब' के प्रकाशन पर अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए इसकी निरंतर प्रगति एवं उन्नति की ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ। साथ ही एल्युमिनी बिनानी का आभार प्रदर्शित करती हूँ कि उसने 'प्रतिबिंब' में यकीनन अपना प्रतिबिंब प्रकाशित किया है।

डॉ. करुणा जोशी
प्राचार्य
सेठ मथुरादास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नाथद्वारा
एवं संरक्षक, एल्युमिनी बिनानी समिति

अपनी बात

वर्ष 2015-16 की बात है। डॉ. युगलकिशोर शर्मा एवं डॉ.बिन्दु कटारिया के प्रयासों से एल्युमिनी बिनानी की प्रारम्भिक बैठक की सूचना मिली। मैं भी अपने 15-16 मित्रों सहित बैठक में सम्मिलित हुआ। अच्छा लग रहा था ...पर क्यों ? शायद अपनी युवावस्था में इस महाविद्यालय के आँगन में पले-बढ़े, खेले-पढे और हँसी खुशी के सुहाने पल बिताए तो लगाव स्वाभाविक है। एल्युमिनी की उस बैठक में सभी मित्रों ने पूरे महाविद्यालय परिसर और भवन के एक-एक कक्ष को घूम फिर कर देखा। दशा-दुर्दशा देखकर मन बड़ा खिन्न हुआ। कारण...वही लगाव। माँ के प्रति लगाव का कोई कारण नहीं होता। मातृवत महाविद्यालय के प्रति लगाव का एकमात्र यही अदृश्य कारण दृष्टिगोचर हुआ। जड़ों से जुड़ाव प्राणी मात्र का स्वभाव है। एल्युमिनी अर्थात जड़ों से जुड़ाव।

एल्युमिनी के महाविद्यालय से जुड़ाव को देखते हुए नेक टीम ने निरीक्षण और मूल्यांकन के दौरान इस बात को भी पूरी प्राथमिकता दी जिसके चलते अच्छी ग्रेड ही नहीं विकास के लिए संतोषप्रद राशि भी मिली। बाद में इस राशि का उपयोग सार्थक ढंग से महाविद्यालय के लिए किया गया जिससे उसकी स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हो सका।

24 अप्रैल 2022 की बैठक में सभी एल्युमिनी बिनानी सदस्यों ने मुझे अध्यक्ष पद देकर जो गुरुतर दायित्व सौंपा है इसके लिए सभी का आभार व्यक्त करता हूँ। सभी साथियों के सहयोग से मैं कुछ अच्छा कर सकूँगा ऐसी मुझे पूरी उम्मीद है। हम सभी एल्युमिनी मिलकर महाविद्यालय के शैक्षिक और भौतिक उन्नयन के लिए तन-मन-धन से प्रयास करेंगे। ऐसा संकल्प हमने इसी बैठक में ले लिया है।

प्रारम्भिक स्तर पर हमने तय किया है कि बैठकें नियमित रूप से आयोजित की जाएँ, अधिकाधिक सदस्यों, विद्यार्थियों, शोधार्थियों को एल्युमिनी बिनानी समिति से जोड़ा जाए, छात्रों के शैक्षिक, व्यावसायिक उन्नयन के लिए कार्यक्रम-कार्यशालाओं का आयोजन किया जाए और महाविद्यालय की छोटी-छोटी भौतिक आवश्यकताओं-समस्याओं का एल्युमिनी सदस्यों के माध्यम से हल कराने का प्रयास किया जाए। साथ ही महाविद्यालय भवन और छात्रावास भवन के समुचित उपयोग हेतु सार्थक प्रयास किए जाएँ।

मुझे प्रसन्नता है कि इस वर्ष नियमित बैठकों का आयोजन, नियमित संपर्क, यथाशीघ्र एक-दो कार्यशालाओं का आयोजन एवं श्री माधव नागदा के सम्पादन में प्रथम वार्षिक पत्रिका प्रकाशन जैसे प्रमुख सार्थक प्रयास हुए हैं जो शीघ्र ही हमें दिखाई देंगे। इसी वर्ष 8 नवंबर से आयोजित पंचदिवसीय मोलेला टेराकोटा कार्यशाला इसी का एक अंग है।

एल्युमिनी बिनानी के कार्यकलापों को गति देने, उन्हें सफल बनाने और कुल मिलाकर महाविद्यालय की भौतिक-शैक्षिक गतिविधियों को नये आयाम देकर नेक टीम और यू.जी.सी. के मानदंडों पर खरा उतरने हेतु संतोषप्रद कार्य निष्पादन के लिए मैं महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ.करुणा जोशी की एल्युमिनी में विशेष रुचि, सचिव डॉ.वंदना जोशी व कोषाध्यक्ष श्री घनश्याम वागरेचा के निरंतर परिश्रम, पूर्व अध्यक्ष डॉ.युगल शर्मा का समर्पण तथा सभी सदस्यों के सहयोगात्मक प्रयासों व त्याग को देखते हुए मैं पूर्णतः आश्वस्त हूँ कि हम कुछ सार्थक परिणाम देने में सफल होंगे।

मैं इस महाविद्यालय के 50-60 वर्षों के समस्त सम्मानित पूर्व विद्यार्थियों, विशेष रूप से युवा पूर्व विद्यार्थियों से यह अपेक्षा करता हूँ कि वे एल्युमिनी बिनानी समिति से जुड़ें और इसके उत्थान में यथायोग्य योगदान प्रदान करें क्योंकि इससे जुड़ने का अर्थ है जड़ों से जुड़ाव; ताकि हमारा यह पौधा सूखे नहीं, मुरझाए नहीं अपितु पल्लवित-पुष्पित होकर और अधिक चहके-महके।

धन्यवाद।

शंकर मालवीय
अध्यक्ष
एल्युमिनी बिनानी समिति
सेठ मथुरादास बिनानी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
नाथद्वारा (राजसमंद)

संपादक की कलम से

24 नवंबर 2014 को डॉ. युगलकिशोर शर्मा, डॉ. बिन्दु कटारिया के सद्प्रयासों एवं तत्कालीन प्राचार्य डॉ. प्रेम ओसवाल की प्रेरणा से एल्युमिनी बिनानी अर्थात पूर्व छात्र समिति, सेठ मथुरादास बिनानी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नाथद्वारा का विधिवत गठन किया गया। इसमें महाविद्यालय के पूर्व छात्र श्री शंकर मालवीय की सक्रिय भूमिका का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। वैसे एल्युमिनी बिनानी के गठन का प्रस्ताव महाविद्यालय के स्वर्ण जयंती समारोह-2013 के आयोजन के समय ही आ गया था।

एल्युमिनी बिनानी की प्रथम बैठक में सदस्यों का उत्साह देखने लायक था। सभी एक-दूसरे से उमंग व उत्साह से मिल रहे थे, भूली हुई यादें टटोल रहे थे, मुरझाई स्मृतियों को सींचकर उनमें प्राण फूँक रहे थे। 'ये गलियां ये चौबारा, यहाँ आएंगे ना दोबारा' की आशंका लेकर बिछुड़े पूर्व छात्रों का यह मिलन अद्भुत था। कई साथी तो पचास वर्ष पश्चात मिल रहे थे इसके बावजूद एक-दूसरे को बखूबी पहचान पा रहे थे।

लेकिन पूर्व छात्र समिति का लक्ष्य मात्र स्नेह मिलन तक ही सीमित नहीं है। न ही यह सिर्फ बुजुर्ग पूर्व छात्रों की संस्था है। इससे युवा पूर्व छात्र भी जरूर जुड़ेंगे। वस्तुतः परिषद महाविद्यालय के भौतिक विकास, अध्ययनरत विद्यार्थियों के सांस्कृतिक, नैतिक व शैक्षणिक उन्नयन के लिए प्रतिबद्ध है, प्रयासरत है। परिषद की नियमित बैठकों में महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए उनके त्वरित क्रियान्वयन की नीति रही है। इसी का परिणाम है कि स्थानीय छात्रों की चित्रकला प्रदर्शनी एवं पंचदिवसीय मृणशिल्प कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। जिसमें राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित मोलेला के टेराकोटा कलाकार श्री राजेन्द्र प्रजापति ने लगातार पांचों दिन आकर छात्रों को इस कला के गुर सिखाए। इसी क्रम में माननीय सदस्यों ने परिषद की एक स्मारिका प्रकाशित करने का भी प्रस्ताव रखा जो 'प्रतिबिंब' के रूप में आपके सम्मुख प्रस्तुत है। चूंकि यह प्रथम प्रयास है अतः कमियाँ रह जाना संभव है, आशा है आप इसे अन्यथा न लेते हुए अपनी महत्वपूर्ण सम्मतियों से हमें अवगत कराएंगे ताकि आगामी अंकों में इन्हें दूर किया जा सके। कुछ साथियों का सुझाव है कि 'प्रतिबिंब' को नियमित पत्रिका के रूप में निकाला जाए। इस ओर भी प्रयास किए जा सकते हैं।

हम उन सबके आभारी हैं जिन्होंने अपना रचनात्मक सहयोग प्रदान किया। उन दानदाताओं का विशेष आभार जिन्होंने विज्ञापन देकर हमारी आर्थिक राह सुगम कर दी।

सह-संपादक डॉ.वंदना जोशी के अप्रतिम सहयोग के लिए आभार शब्द अत्यंत छोटा है। श्री शंकर मालवीय एवं डॉ.युगलकिशोर शर्मा को तो मैं समय-असमय फोन करता ही रहा हूँ, उनकी अमूल्य सम्मतियों से पत्रिका निश्चित रूप से समृद्ध हुई है। स्मारिका निकालने की प्रेरणा देने वाले साथी श्री हीरानंद आसवानी का हृदय से आभार। प्राचार्य डॉ.करुणा जोशी का आशीर्वाद तो हम सबके साथ है ही।

माधव नागदा

प्रतिवेदन

एल्युमिनी बिनानी : प्रगति के पथ पर

डॉ. युगलकिशोर शर्मा

(प्रसिद्ध चित्रकार, पूर्व सह आचार्य स्थानीय महाविद्यालय एवं एल्युमिनी बिनानी के संस्थापक सदस्य)

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि एल्युमिनी बिनानी (पूर्व छात्र परिषद बिनानी) द्वारा इस वर्ष प्रथम सोविनियर का प्रकाशन किया जा रहा है। परिषद के गठन का प्रस्ताव सेठ मथुरादास बिनानी राजकीय महाविद्यालय नाथद्वारा के स्वर्ण जयंती समारोह -2013 के आयोजन के समय आया ।

चूँकि मैं इस महाविद्यालय का छात्र रहा था और यहीं पर चित्रकला विभाग में सह आचार्य पद पर कार्यरत था अतः तत्कालीन प्राचार्य ने परिषद के गठन का कार्य मुझे सौंपा । तत्पश्चात मैंने पूर्व छात्रों से सम्पर्क किया।

दिनांक 23 नवंबर 2014 को पहली मीटिंग आयोजित की गई जिसमें 21 सदस्यों ने भाग लिया । तत्कालीन प्राचार्य डॉ. प्रेम ओसवाल के निर्देशन में कार्यकारिणी का चयन किया गया जिसमें डॉ. युगल किशोर शर्मा को अध्यक्ष, श्री माधव नागदा को उपाध्यक्ष, डॉ. बिंदु कटारिया को सचिव, एवं डॉ.एस.एस. डुलावत को कोषाध्यक्ष बनाया गया। संरक्षक मंडल के साथ पदेन प्राचार्य को संरक्षक बनाया गया। सभी की सहमति से परिषद का नाम एल्युमिनी बिनानी रखा गया। परिषद की आजीवन सदस्यता राशि एक हजार तथा एक वर्ष हेतु तीन सौ रुपए तय की गई। इसके साथ ही परिषद के संविधान पर भी चर्चा की गई जिसे बाद में तैयार किया गया।

दिनांक 25 अक्टूबर 2015 को दूसरी मीटिंग आयोजित की गई जिसमें बैंक अकाउंट खुलवाने तथा परिषद का रजिस्ट्रेशन कराने का निर्णय लिया गया। इसके साथ ही परिषद के संविधान का प्रारुप रखा गया जिसे सदन ने मंजूरी दी। इस समय विद्यार्थियों के चित्रों की एक कला प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। तत्पश्चात बैंक अकाउंट खुलवाया गया तथा रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया पूरी कर ली गई। दिनांक 7.4.2016 को रजिस्ट्रेशन करा लिया गया।

दिनांक 30 अक्टूबर 2015 को महाविद्यालय में परिषद ने तीसरी मीटिंग नेक टीम के साथ आयोजित की। नेक टीम ने परिषद की बहुत प्रशंसा करते हुए प्रोत्साहित किया। नेक टीम द्वारा

महाविद्यालय को "बी" ग्रेड दिये जाने में परिषद के गठन का प्रमुख योगदान रहा। इसके कारण रूसा द्वारा महाविद्यालय के विकास कार्य हेतु दो करोड़ की राशि स्वीकृत की गई।

दिनांक 27 अक्टूबर 2017 को चौथी मीटिंग आयोजित की गई जिसमें सभी सदस्यों को रजिस्ट्रेशन की जानकारी दी गई। साथ ही परिषद के सदस्यों का एक वाट्सएप ग्रुप बनाया गया। सदस्यों की संख्या बढ़ाने तथा स्मारिका निकालने पर चर्चा की गई।

दिनांक 9 जनवरी 2021 को पांचवीं मीटिंग कोविड के कारण आनलाईन आयोजित की गई थी जिसमें सभी सदस्यों के कुशल मंगल की जानकारी प्राप्त की गई तथा सदस्यों की संख्या बढ़ाने व अगली मीटिंग में नवीन कार्यकारिणी के चयन पर चर्चा हुई।

दिनांक 24 अप्रेल 2022 को छठी मीटिंग आयोजित की गई जिसमें नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। इसमें शंकरलाल जी मालवीय को अध्यक्ष, डॉ. वन्दना जोशी को सचिव, घनश्याम जी वागरेचा को कोषाध्यक्ष पद पर चयनित किया गया। साथ ही स्मारिका के लिए सभी सदस्यों से राशि ली गई ताकि काम प्रारंभ किया जा सके।

दिनांक 4 सितंबर 2022 को सातवीं मीटिंग आयोजित की गई जिसमें स्मारिका की प्रगति के बारे में चर्चा हुई तथा महाविद्यालय में स्थानीय कला जैसे पिछवाई चित्रकला,मोलेला टेराकोटा, हवेली संगीत, साहित्यिक रचना आदि प्रतियोगिता आयोजित कराने पर विचार किया गया।

दिनांक 15 सितंबर 2022 को मुख्य कार्यकारणी के सदस्यों की मीटिंग आयोजित हुई जिसमें बैंक अकाउंट से संबंधित चर्चा की गई।

दिनांक 8 नवंबर 2022 से एल्युमिनी बिनानी द्वारा स्थानीय महाविद्यालय के चित्रकला विद्यार्थियों के लिए पाँच दिवसीय टेरकोटा कला कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त टेराकोटा कलाकार श्री राजेन्द्र प्रजापत ने बराबर उपस्थित रहकर विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। इस कार्यशाला में विद्यार्थियों ने मिट्टी से बहुत ही सुंदर कलाकृतियाँ बनाई जिन्हें महाविद्यालय में यथास्थान सजाया जाएगा।

संस्मरण

यादों के गलियारे में चहलकदमी

डॉ. शिबन कृष्ण रैणा

(कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से पीएचडी करने के बाद 1966 में राजस्थान लोक सेवा आयोग,अजमेर द्वारा हिंदी व्याख्याता के पद पर मेरा चयन हुआ। पहली पोस्टिंग भीलवाडा के राजकीय कॉलेज में हुयी और साल-भर बाद प्रभु श्रीनाथजी की नगरी स्थित एस.एम.बी. राजकीय कॉलेज में मेरा स्थानान्तर हुआ। 1966 से लेकर 1977 तक मैं इस नगर में रहा और नाथद्वारा की पावन भूमि मेरे अकादमिक और पारिवारिक उत्कर्ष की हर दृष्टि से सहचरी सिद्ध हुयी।इस पावन नगर से जुडी मेरी बहुमूल्य स्मृतियाँ आज भी मुझे आह्लादित और स्पन्दित करती हैं। यहाँ पर मैं इन यादों को सिलसिलेवार तरीके से प्रस्तुत कर रहा हूँ।)

क्रिकेटर लक्ष्मण सिंह

क्रिकेट की गहमागहमी चहुँ ओर है। एक बात मुझे भी याद आ रही है। किसी जमाने में उदयपुर निवासी लक्ष्मणसिंह राजस्थान की टीम के ऑपनेर हुआ करते थे। वे अपनी टीम के साथ नाथद्वारा आए मैच खेलने। तब मेरी पोस्टिंग नाथद्वारा कॉलेज में ही थी। नाथद्वारा की टीम में मैं भी शामिल था। पास के कोठियारा ठिकाने के दो नवयुवक हमारी टीम की ओर से खेले थे। इन में से एक इन्दौर यूनिवर्सिटी की क्रिकेट-टीम के कप्तान रहे थे। हमारी टीम हारी ज़रूर थी मगर टक्कर जोरदार दी। लगभग 50 साल पहले की बात होनी चाहिये। लक्ष्मण सिंह अब इस संसार में नहीं रहे। राजस्थान, सेंट्रल जोन और शेष भारत की टाम की ओर से खेले थे।

माधव नागदा

माधव नागदा हिंदी के सुपरिचित कहानीकार हैं और बहुत पहले यानी सत्तर के दशक में सेठ मथुरादास बिनानी राजकीय कॉलेज,नाथद्वारा में मेरे विद्यार्थी रहे हैं। पिछले दिनों उनको कहीं से मेरा नंबर मिला और बातचीत हुई। नाथद्वारा की बातें, सहपाठियों के हालचाल, गुरुजनों की बातें---कुल मिलाकर सत्तर के दशक की सारी बातें मेरी आँखों के सामने तिरने लगीं। अच्छा लगा उन से वार्तालाप

कर के। लगभग 50 वर्षों के बाद शिष्य अपने गुरु को याद रखे, यह बहुत बड़ी बात है। मैंने भी उन्हें दिल की गहराइयों से आशीर्वाद दिया। बातों ही बातों में उन्होंने यह समाचार भी दिया कि नाथद्वारा कॉलेज में पढ़े छात्रों ने एक एसोसिएशन बनाई है और साल में तीन-चार बार मिलते भी हैं। अभी 24 अप्रैल 22 को ये सारे उत्साही पूर्व विद्यार्थी/महानुभाव कॉलेज परिसर में मिले भी थे। सुना है मेरी चर्चा भी इन मेधावी विद्यार्थियों ने की।जितने ये गौरवान्वित हैं उतना मैं भी हूँ। इस अवसर पर लिए गए कुछ चित्र नागदा जी और एक अन्य विद्यार्थी ने मुझे भी भेजे हैं। फोटो में ही सही पच्चास वर्षों के बाद अपने उस कॉलेज परिसर को दुबारा देखना बहुत अच्छा लग रहा है। 1967 से लेकर 1977 तक मैंने इस महाविद्यालय में पढ़ाया है। सभी विद्यार्थियों को एक बार पुनः आशीर्वाद।

पुरानी मशीनरी कदे नी खरीदनी

उस ज़माने में साइकल से ही हम लोग कॉलेज जाया करते थे। स्कूटर आदि किसी विरले प्रोफेसर के पास ही हुआ करता था। याद आ रहा है कि नाथद्वारा नगरी के प्रसिद्ध चौपाटी चौराहे पर कोठारी ब्रदर्स नाम की एक साइकल की दुकान हुआ करती थी। अपने मकान मालिक का रिफरेन्स लेकर मैं कोठारीजी के पास उनकी दुकान पर पहुंचा। निवेदन किया: कोई सैकंड हैंड अच्छी-सी साइकिल मिल सकती है क्या? मुझे तहसील वाले सोनीजी ने भेजा है। मैं यहाँ कॉलेज में पढ़ाता हूँ। कोठारीजी ने आदरभाव से मुझे निहारा। फिर बोले: सैकंड हैंड साइकिलें हैं तो सही। मगर मैं आपको खरीदने की सलाह नहीं दूंगा।

'क्यों भला?' मैंने पूछा।

मेरी जिज्ञासा को उन बुज़ुर्गवार ने अपनी स्वभाषा मेवाड़ी में जिस तरीके से शांत किया, उसे मैं आज तक भूला नहीं हूँ: पुरानी मशीनरी कदे नहीं खरीदनी। पेंचकस-पानो लारे राखणो पड़ेगा।

शॉर्ट वेव, मीडियम वेव

मेरे सहयोगी अंग्रेज़ी के प्रोफेसर चाँदनारायण श्रीवास्तव साहब को भाँग-सेवन का शौक था। (श्रीवास्तव साहब अब इस संसार में नहीं रहे।) कई बार मुझ से भी लेने का अनुरोध किया, मगर मैं हमेशा टालता रहा। आखिर होली के दिन वे मुझे अपने साथ चौपाटी ले गए। वहां वे अपने पूर्व परिचित की ठंडाई की दुकान के अंदर चले गए। मैं भी साथ में हो लिया। दुकानदर को इशारा करते हुए श्रीवास्तव साहब ने कहा: दो गिलास। दुकानदार समझ गया कि आज एक और कस्टमर बढ़ गया। बोला दोनों पॉजिटिव? हाँ, श्रीवास्तव साहब ने जवाब दिया। ठण्डाई वाला पुनः बोला, शार्ट वेव या मीडियम वेव? एक मीडियम और दूसरा शार्ट वेव। श्रीवास्तव साहब ने समझाया।

दोनों के बीच हुई सांकेतिक भाषा को मैं कुछ-कुछ समझ गया। घर पहुंचते-पहुंचते मैं सचमुच सातवें आसमान पर तैर रहा था। खूब तो मिठाई खाई और खूब नाच-गाना किया। उस दिन के बाद नाथद्वारा छूटने तक मैं जब भी चौपाटी की तरफ जाता तो यदाकदा; पॉज़िटिव शॉर्ट वेव का आस्वादन अवश्य करता। वे भी क्या दिन थे!

दुबई में प्रभु श्रीनाथजी

1967 से लेकर 1977 तक मैं प्रभु श्रीनाथजी की नगरी नाथद्वारा में सेवारत रहा। एक तरह से मेरे अकादमिक और गृहस्थ जीवन की शुरुआत इसी पावन नगरी से हुयी। स्मृति-पटल पर इस जगह की बहुत-सारी सुखद स्मृतियाँ अभी तक अंकित हैं। इधर, गृहस्थी बढती-फैलती गयी, अब पिछले तीस-पैंतीस वर्षों के दौरान जिंदगी के सारे उतर-चढ़ावों और खट्टे-मीठे अनुभवों को पीछे मुड़कर देखना अब बहुत अच्छा लगता है। दो बेटियों की शादियाँ हो चुकी हैं। दोनों के पति सेना में उच्च ओहदों पर हैं। बेटा कुछेक वर्षों तक तो स्वदेश में ही रहा और बाद में वह दुबई चला गया किसी बड़ी कंपनी में।

मैं जब भी दुबई जाता हूँ तो दुबई में बने प्रभु श्रीनाथजी के मंदिर के दर्शन करना नहीं भूलता। बेटा भी चूँकि नाथद्वारा के 'जागृत-बाल-मन्दिर' में पहली-दूसरी क्लास में पढ़ा है, अतः मुझे दुबई स्थित श्रीनाथजी के मंदिर लेजाने में ज़रा भी आलस्य नहीं करता। अजमान (जहाँ पर बेटा रहता है) से लगभग एक-डेढ़ घंटे की दूरी पर स्थित यह मंदिर-परिसर देखने लायक है। सर्वधर्म सद्भाव की सुंदर झलक मिलती है यहाँ। सिखों का गुरुद्वारा, शिरडी के सांई का मंदिर, शिवजी का मंदिर, प्रभु श्रीनाथजी का मंदिर आदि सबकुछ एक ही जगह पर। एक मस्जिद भी बगल में है। पिछली बार कुछ ऐसा योग बना कि दुबई स्थित श्रीनाथजी के मंदिर के स्थानीय मुखियाजी से भेंट हो गयी। जब उन्हें यह मालूम पड़ा कि मैं नाथद्वारा में रहा हूँ और वहां कॉलेज में मैं ने पढ़ाया है तो पूछिये मत। सत्तर के दशक की नाथद्वारा नगर की सारी बातें और घटनाएँ दोनों की आँखों के सामने उभर कर आ गयीं।

मनोहर कोठारीजी, गिरिजा व्यास, नवनीत पालीवाल, दशोराजी, भंवरलाल शर्मा, बहुगुणा साहब, ललितशंकर शर्मा, मधुबाला शर्मा, बाबुल बहनजी, कमला मुखिया, भगवतीलाल देवपुराजी, जमनालाल गुर्जर, शोभजी आदि जाने कितने-कितने परिचित नाम हमारे वार्तालाप के दौरान याद आये। हालांकि वे सीधे-सीधे मेरे विद्यार्थी कभी नहीं रहे क्योंकि जब मैं कॉलेज में था तो वे आठवीं कक्षा में पढ़ते थे। मगर जैसे ही उन्हें ज्ञात हुआ कि नाथद्वारा मंदिर के वर्तमान मुखियाजी श्री इंद्रवदन मेरे विद्यार्थी रहे हैं तो वे सचमुच विह्वल हो उठे। गदगद इतने हुए कि मुझे अपना गुरु समझने लगे यानी गुरु के गुरु! स्पेशल प्रसाद मंगवया और मुझे भेंट किया। यों, मंदिर के बाहर फल-प्रसाद की कई-सारी दुकानें हैं मगर एक बात जो सुनने में आई वह उल्लेखनीय है। दुबई शहर के बर-दुबई इलाके में जहाँ पर कि समूचा मंदिर-परिसर स्थित है, के बाहर एक मुस्लिम परिवार ऐसी ही एक दुकान चला

रहा है, जिसमें फूल-माला और फलों से लेकर पूजा-पाठ का हर सामान मिलता है। इस परिवार को हिंदू धर्म की अच्छी समझ है। हुसैन खौरी नाम के इस शख्स ने भीड़भाड़ वाले पुराने दुबई इलाके में चार दशक पहले पूजा-पाठ के सामान की एक दुकान शुरू की थी। यह दूकान शहर में पूजा-सामग्री की सबसे पुरानी दुकानों में से एक बताई जाती है। पूजा सामग्री की दुकान के साथ ही हसन एक खिलौने की दुकान भी चलाते हैं।

एक मुस्लिम श्रद्धालु द्वारा किसी हिन्दू मंदिर के बाहर पूजा-सामग्री बेचने का यह अकेला उदाहरण नहीं है। कश्मीर के तुलामुला (क्षीरभवानी) मंदिर में भी कुछ ऐसा ही भाईचारे का माहौल देखने को मिलता है। इस मंदिर की भी यही विशेषता है कि आज भी इस जगह पर सदियों से चली आ रही कश्मीरी भाईचारे की रिवायत जिंदा है। मंदिर में चढ़ने वाली सामग्री इलाके के स्थानीय मुस्लिम बिरादरी के लोग बेचते हैं जो भाईचारे का एक बहुत बड़ा उदाहरण है। पूजा-सामग्री बेचने वाले श्रद्धालु शौकत हुसैन की उम्र 70 साल की हो गई है। उनके वालिद साहब भी पूजा का सामान बेचने का यहीं काम करते थे। उनका कहना है कि हमारे बीच हिंदु-मुस्लिम के भेद वाली कोई बात नहीं थी, लेकिन क्या करें? वक्त खराब आया कि हमारे कश्मीरी पंडित भाइयों को यहां से जाना पड़ा। उम्मीद है कि जल्द ही कश्मीर में फिर से कश्मीरी पंडित हम लोगों के साथ अपने पुराने घरों में रहने आ जाएंगे।

डॉ. शिबन कृष्ण रैणा

(जन्म 22 अप्रैल, 1942 को श्रीनगर-कश्मीर में। कई पुरस्कारों एवं सम्मानों से समादृत डॉ. रैणा वर्ष 1999 से लेकर 2001 तक भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला में अध्येता/फेलो रहे, जहाँ उन्होंने "भारतीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद की समस्याएं" विषय पर कार्य किया। सोलह पुस्तकों और सौ से भी अधिक लेखों/शोधपत्रों के लेखक डॉ. रैणा देश की कई साहित्यिक/सांस्कृतिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। राजस्थान साहित्य अकादमी का पहला 'अनुवाद पुरस्कार' प्राप्त करने का श्रेय डॉ. रैणा को जाता है। कश्मीरी रामायण "रामावतारचरित" का सानुवाद देवनागरी में लिप्यंतर करने का श्रेय डॉ. रैणा को है। इस श्रमसाध्य कार्य के लिए बिहार राजभाषा विभाग ने इन्हें ताम्रपत्र से विभूषित किया है। हिंदी के प्रति योगदान को देखकर डॉ. रैणा को भारत सरकार ने 2015 में विधि और न्याय मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति का गैर-सरकारी सदस्य मनोनीत किया।)

संपर्क: 8209074186, 9414216124
skraina123@gmail.com

आलेख

बिनानी महाविद्यालय : एक विहंगम दृष्टि

डॉ. वंदना जोशी

(*स्थानीय महाविद्यालय में चित्रकला व्याख्याता डॉ. वंदना जोशी हिन्दी व राजस्थानी की प्रसिद्ध साहित्यकार हैं। अभी तक छः पुस्तकें प्रकाशित। कई एकल व समूह कला प्रदर्शनियाँ आयोजित। आकाशवाणी से लगातार कला वार्ताएं प्रसारित। प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में शोध आलेख तथा अन्य रचनाएँ प्रकाशित*)

राजस्थान के दक्षिणी भाग में राजसमन्द जिले के अंतर्गत अरावली की उपत्यकाओं में नंदनंदन अनानंदकंद प्रभु श्रीनाथजी की पावन नगरी श्रीनाथद्वारा स्थित है। झीलों की नगरी उदयपुर से 48 किलोमीटर दूर राष्ट्रीय राजमार्ग आठ पर श्री नाथद्वारा अवस्थित है। हल्दीघाटी से 16 किलोमीटर दूर स्थित शुद्धाद्वैत दर्शन एवं पुष्टि मार्ग का विश्वप्रसिद्ध प्रधान केन्द्र प्रथम पीठ श्रीनाथद्वारा है।यह स्थान वैष्णव भक्तों की भक्ति से परिपूर्ण नगरी है।

श्रीनाथद्वारा में उच्च शिक्षा केन्द्र की स्थापना हेतु सेठ भवानी दास जी बिनानी ने अपने पिता सेठ मथुरा दास बिनानी की स्मृति में महाविद्यालय भवन निर्माण का संकल्प लिया । यह महाविद्यालय राजस्थान विश्वविद्यालय से सम्बद्ध होकर 9 जुलाई 1962 को कला संकाय के लगभग 60 विद्यार्थियों से आरम्भ हुआ। उस समय विद्यार्थी लाल बाजार स्थित साहित्य मण्डल भवन में अध्ययन करते थे। दिनांक 15 सितम्बर 1964 को महाविद्यालय भवन बनकर तैयार हो गया तत्पश्चात अध्ययन अध्यापन इस परिसर में होने लगा। महाविद्यालय की उच्च शिक्षा की पूर्णता हेतु अभी कई कदम शेष थे।

महाविद्यालय के प्रवेश द्वार के सामने ही लगी श्रमिक की मूर्ति आगंतुकों को शिक्षा स्वतः प्रदान कर देती है। कहती है

अभी तो तुम जवां हो
थक कर यों न बैठो
कर्मशील तुम बनो
उठो तत्काल
मैं तुम्हारे साथ हूं

मशाल मेरे हाथ है
देखो तुम केवल
शरीर से ही ना उठो
कुछ सोचो
मानसिक स्तर से भी उठो
उठो, उठ भी जाओ
और थोड़ा ऊपर उठो
मैं तुम्हारे साथ हूं
अभी तुम जवां हो।

फिर नाथद्वारा की नगरी में श्रीनाथजी तो है ही। यह मूर्ति तात्कालिक प्राचार्य सुरेंद्र दत्त बहुगुणा के कर कमलों द्वारा गढ़ी गई, जिसे पूर्व विद्यार्थी समिति के सदस्य बड़े गर्व और श्रद्धा के साथ बतलाते हैं।

नागरिकों के प्रयत्न से 1963 ई. में वाणिज्य और विज्ञान की कक्षाएं भी स्तानक स्तर पर प्रारंभ हुई। तत्पश्चात सन 1981 ई. में स्नातकोत्तर चित्रकला, 1986 ईस्वी में वाणिज्य स्नातकोत्तर व्यवसाय प्रशासन की कक्षाएं एवं 1988 ईस्वी में इतिहास विषय में स्नातकोत्तर कक्षाएं आरंभ हुई। संस्कृत के विद्यार्थियों और नागरिकों के प्रयत्न स्वरूप 1999 ई. में संस्कृत और विज्ञान संकाय के रसायन शास्त्र विषय में स्नातकोत्तर कक्षाओं की स्वीकृति से महाविद्यालय कला, विज्ञान एवं वाणिज्य में स्नातकोत्तर कक्षाओं का केंद्र बना। सन 2001 में कंप्यूटर में पीजीडीसीए प्रारंभ हुआ। 2021 ई. में भूगोल विषय में 2022 ई. में प्राणी शास्त्र, वनस्पति शास्त्र, गणित और भौतिक विज्ञान में भी स्नातकोत्तर कक्षाओं में पाठ्यक्रम आरंभ हो गया।

नियमित अध्ययन अध्यापन के परिणाम स्वरूप गुणात्मक दृष्टि से महाविद्यालय के कुछ विद्यार्थीयों ने पिछले वर्षों में स्नातकोत्तर स्तर पर स्वर्ण पदक प्राप्त कर महाविद्यालय को गौरवान्वित किया है। गत वर्ष चित्रकला विभाग के स्नातकोत्तर कक्षा में लोकेश लोहार को स्वर्ण पदक से नवाजा गया। यहां विभिन्न सांस्कृतिक, साहित्यिक, समाज सेवा, खेलकूद आदि पाठ्येतर गतिविधियां भी आयोजित होती हैं और यहां विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का भी ध्यान रखा जाता है। यहां के विद्यार्थियों एवं पहलवानों ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विजय पताकाएं कई स्थानों पर फहराई हैं।

बिनानी परिवार द्वारा ही महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्रों के लिए एक छात्रावास बनाया गया तथा महाविद्यालय के पास विशाल भूभाग है जिसमें विकास की अत्यधिक संभावनाएं दिखाई देती हैं। विद्यार्थियों को सभी प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध कराने तथा उनके शैक्षणिक और नैतिक उन्नयन के लिए वर्तमान प्राचार्य तथा महाविद्यालय परिवार के समस्त सदस्य सतत सचेष्ट एवं प्रयत्नशील हैं।

प्रबुद्ध गणमान्य नागरिकों की सक्रियता एवं सहयोग से महाविद्यालय निरंतर उन्नति की ओर अग्रसर है ।किस्मत कुंवर चुंडावत ने ट्रिपल जंप स्पर्धा में प्रथम स्थान प्राप्त किया, पूजा कंवर डिस्कस थ्रो में द्वितीय और हैमर थ्रो स्पर्धा में तृतीय स्थान प्राप्त कर राजस्थान में महाविद्यालय का नाम रोशन किया। किस्मत कुंवर चुंडावत विश्वविद्यालय स्तर पर चयनित होकर ग्वालियर में मोहनलाल सुखाड़िया विश्व विद्यालय उदयपुर का प्रतिनिधित्व करके आई।

कुश्ती नाथद्वारा की खेल संस्कृति का अभिन्न अंग है अनमोल सनाढ्य ने 96 किलोग्राम की फ्रीस्टाइल ग्रीको रोमन; मंगलेश सनाढ्य ने 86 किलोग्राम की स्टाइल ग्रीको रोमन; कुश्ती की स्पर्धाओं में भाग लिया। गोपाल मीणा तथा सुरेंद्र सिंह राजपूत ने पश्चिम क्षेत्र अंतर विश्वविद्यालय हैंडबॉल टूर्नामेंट में सुखाड़िया विश्व विद्यालय की टीम के सदस्य रूप में सहभागिता की। 2021-22 में महाविद्यालय में कुल 2002 विद्यार्थी रहे 1082 छात्र और 920 छात्राएं रही। विज्ञान संकाय में (122 छात्र और 152 छात्राएं) कुल 274 विद्यार्थी रहे वाणिज्य संकाय में (230 छात्र और 208 छात्राएं) कुल 438 विद्यार्थी और कला संकाय में (544 छात्राएं और 706 छात्र) कुल 1250 विद्यार्थी और कंप्यूटर के पीजीडीसीए में (16 छात्राएं और 24 छात्र) 40 विद्यार्थी रहे। महाविद्यालय स्तर पर स्नातक कला में लोकेश गायरी अधिकतम 1429 अंक लेकर उत्तीर्ण हुआ, स्नातक वाणिज्य में सुमन कुंवर चौहान 1676 अंक लेकर और विज्ञान में तन्वी सोनी 1911 अधिकतम अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण हुई। स्नातकोत्तर स्तर पर अर्थशास्त्र में अनीता यादव 67.30%, संस्कृत में राखी श्रीमाली 73.89%, चित्रकला में लवली सनाढ्य 77.10%, इतिहास में, विनायक सिंह 66.73%, भूगोल में सुमन सुथार 66.67%, विज्ञान विभाग के रसायन शास्त्र विषय में हर्षा पालीवाल 80.25%, वाणिज्य विभाग के एबीएसटी विषय में ऋचा अग्रवाल 69.80%, ई ए एफ एम विषय में हिमानी विजयवर्गीय 66.90% अधिकतम अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण हुई। इस प्रकार सांस्कृतिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक महत्व वाले नाथद्वारा नगर का यह महाविद्यालय 21वीं सदी में उच्च शिखर छूने हेतु लालायित है। सत्र 2003 की नैक टीम (राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद) की रिपोर्ट के आधार पर इस महाविद्यालय को सी** का स्तर प्रदान किया, 2015 ई. में इसे बी + स्तर पर रखा गया। आशा है कि हम सभी के सहयोग से और उच्च स्तर प्राप्त कर सकेंगे। इसमें एल्युमिनी बिनानी का भी अभूतपूर्व सहयोग रहा। आगे भी पूर्व विद्यार्थी समिति महाविद्यालय का सहयोग करती रहेगी। आशा ही नहीं विश्वास भी है कि भविष्य में महाविद्यालय विकास के कदम बढ़ाता रहेगा।

पूर्व छात्र परिषद: अवधारणा, दशा आर दिशा

घनश्याम वागरेचा

(*नाथद्वारा निवासी श्री घनश्याम वागरेचा स्काउटिंग में हिमालय वूड बेज का सर्वोच्च प्रशिक्षण प्राप्त स्काउट हैं।* योग्यता M.A. (Pol. Sc.) B.Sc. (Maths) B.Ed. M.Ed.(Dis.)। संप्रति स्थानीय बिनानी महाविद्यालय में वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक एवं कोषाध्यक्ष एल्युमिनी बिनानी समिति)

किसी भी शैक्षणिक संस्था हेतु पूर्व विद्यार्थी परिषद का अत्यंत महत्व है। पूर्व विद्यार्थी परिषद किसी विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय अथवा किसी अकादमिक संस्था से शिक्षा प्रात ऐसे पूर्व विद्यार्थियों का संघ है जो अपनी मातृ संस्था के लिए कुछ करने की भावना से अनुप्रेरित होते हैं। पूर्व छात्र परिषद की अवधारणा पश्चिम से आई है। वहाँ इसे एल्युमिनी असोसियेशन नाम दिया गया है। सबसे पुरानी एल्युमिनी असोसियेशन या कि पूर्व विद्यार्थी परिषद UK स्थित Henot-Watt विश्वविद्यालय की है जिसकी स्थापना सन 1864 ई. में Watt क्लब नाम से हुई।

सबसे बड़ी एल्युमिनी असोसियेशन की बात करें तो वह संयुक्त राज्य अमरीका की पेनसिल्वेनिया विश्वविद्यालय की है जिसके 673845 पूर्व विद्यार्थी सदस्य हैं। इसकी स्थापना सन 1870 ई. में हुई थी। इसके बाद हम ले सकते हैं संयुक्त राज की ही IUAA अर्थात इंडियाना युनिवर्सिटी एल्युमिनी असोसियशन जिसके 650000 से अधिक सदस्य हैं। इसकी विश्वभर में 160 शाखाएँ हैं। इसकी स्थापना 1854 ई. में हुई थी। इसी कड़ी में हम मिशिगन विश्वविद्यालय की पूर्व विद्यार्थी परिषद ले सकते हैं जिसके 575000 सदस्य हैं तथा जिसकी स्थापना 1892 ई. में हुई थी।

भारत में भी निम्न संस्थाओं का एक श्रेष्ठ एल्युमिनी नेट वर्क है जो अपनी मातृ संस्था और वहाँ के वर्तमान विद्यार्थियों के हितों के लिए समर्पित ढंग से कार्य कर रहा है-

IIT दिल्ली, मुंबई, खड़गपुर, रुड़की, फेकल्टी ऑफ मेनेजमेंट स्टडीज़, नई दिल्ली, हिन्दू कॉलेज, हंसराज कॉलेज, सेंट स्टीफेंस कॉलेज, आईआईएम अहमदाबाद, बैंगलोर, लेडी श्रीराम कॉलेज, किरोड़ीमल कॉलेज आदि।

अधिकांश पूर्व विद्यार्थी कई सरकारी एवम गैर सरकारी कार्यालयों में कई महत्वपूर्ण पदों पर पदस्थापित होते हैं, उनका प्रत्यक्ष एवम परोक्ष लाभ संस्था को मिल सकता हैं। पूर्व विद्यार्थियों का संस्था से लगाव होता है। पूर्व छात्र सकारात्मक सोच के साथ संस्था हित को ध्यान में रखते हुए कार्य करते है।

कई पूर्व छात्र व्यवसाय में भी अच्छी स्तिथि में होते हैं। वे आर्थिक एवम सामाजिक रूप से सहयोग कर सकते है। इससे पूर्व छात्र तथा संस्था का भी गौरव बढ़ता है। पूर्व विद्यार्थी परिषद के अपने संसाधन होते है, बजट होता है। इसका उपयोग संस्था के हित में किया का सकता है। यह परिषद पूर्व छात्रों के लिए एक प्लेटफॉर्म है जिसके तहत संस्था के हित में कार्य किया जा सकता है।

यह परिषद रोजगार मेला, कोचिंग सुविधा, चिकित्सा शिविर सहित कई सामाजिक, शैक्षणिक कार्यक्रम कर सकती है। वर्तमान विद्यार्थियों के लिए तो यह परिषद बहुत ही लाभकारी है। परिषद वर्तमान छात्रों के लिए मोटिवेशनल कार्यक्रम, केम्पस प्लेसमेंट, आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को छात्रवृत्ति, संस्था की खेल प्रतिभाओं के लिए बेहतर प्रशिक्षण सुविधाएं मुहैया करवाना जैसे कार्यक्रम हाथ में ले सकती है। जहाँ सशक्त एल्युमिनी नेटवर्क है वहाँ ये काम हो भी रहे हैं। इसके अलावा परिषद का ब्लॉग, समाचार पत्र, मेगज़ीन का प्रकाशन, शैक्षणिक-सांस्कृतिक भ्रमण जैसे कार्यक्रम भी कर सकतीं हैं।

नैक टीम के विजिट के समय भी इस टीम के सदस्य पूर्व छात्र परिषद से महाविद्यालय के बारे में जानकारियां लेकर अंक देते है । कॉलेज लेवल पर भी समन्वय हेतु एक समिति प्राचार्य द्वारा बनाई जाती है। कॉलेज के पूर्व छात्र जिन्होंने महाविद्यालय में नियमित अध्ययन करते हुए कोई डिग्री या डिप्लोमा प्राप्त किया हो, उन सभी को इस परिषद की सदस्यता ग्रहण कर अपने उपयोगी सुझाव देने चाहिए। जय हिन्द जय भारत।

बढ़ती उम्र में हड्डियों और जोड़ों की बीमारियाँ

डॉ. बी.एल. कुमार

(राजसमंद जिले के छोटे से गाँव करोली में जन्मे डॉ. बी. एल.कुमार आज अस्थि-रोग किशेषज्ञ के रूप में जाना-पहचाना नाम है। आपकी ख्याति राजस्थान में ही नहीं पड़ोसी राज्यों तक फैली हुई है। सेठ मथुरादास बिनानी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नाथद्वारा के पूर्व छात्र रहे डॉ.कुमार वर्तमान में पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस, उमरडा, उदयपुर में सीनियर प्रोफेसर एवं हेड ऑफ अर्थोपेडिक डिपार्टमेन्ट के पद पर अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं।)

भारत में इस समय लगभग 14 करोड़ से अधिक जनसंख्या 60 वर्ष से अधिक है तथा आने वाले वर्षों में इस संख्या में और भी वृद्धि होगी। यह सब बेहतर जीवन-स्तर, अच्छे खान-पान, विकसित इलाज की सुविधाओं एवं चिकित्सा क्षेत्र में आधुनिक अनुसंधान के कारण संभव हो सका है। बढ़ती उम्र के साथ सामान्यतया शारीरिक व मानसिक स्तर पर कमजोरी तथा अन्य विकार भी बढ़ने लगते हैं। हृदय व रक्त से संबन्धित धमनियों, मूत्र-तंत्र, तंत्रिकाओं, हड्डियों, जोड़ों से संबन्धित समस्याएँ एवं मानसिक कमजोरी आदि बढ़ने लगती है। बढ़ती उम्र के प्रभाव से शरीर की अस्थियों, मांसपेशियों में कमजोरी, जोड़ों में दर्द, सूजन व असंतुलन ,कमजोरी अथवा बढ़ते वजन के कारण गिरने, बाथरूम में फिसलने, कमर के हल्के से झटके से भी हाथ-पैर व रीढ़ की हड्डी में फ्रेक्चर हो जाता है। इसके अलावा घुटनों, कुल्हे, कंधों, रीढ़ की हड्डी व जोड़ों में सूजन आ सकती है, दर्द हो सकता है। इसे चिकित्सा की भाषा में ऑस्टियोअर्थराइटिस कहते हैं। यदि हड्डियों की मात्रा कम हो जाए व कमजोर हो तो इसे ऑस्टियोपोरोसिस कहा जाता है। इस उम्र में फ्रेक्चर, कमर में दर्द, गर्दन में दर्द, डिसलोकेशन आदि समस्याएँ हो जाती हैं। संक्रमण जनित रोग, उच्च रक्तचाप, हार्ट अटेक, ब्रेन हेमरेज, निमोनिया व अन्य बीमारियों के कारण हड्डियों से संबन्धित रोगों के इलाज में बाधा उत्पन्न होती है।

बढ़ती उम्र की आम बीमारी **ऑस्टियोपोरोसिस** है। इस रोग में हड्डियों की मात्रा आवश्यकता से कम हो जाती है जिससे वे कमजोर पड़ जातीं हैं। प्रायः स्त्रियों में रजोनिवृत्ति की उम्र अर्थात 45 से 55 वर्ष की उम्र में हड्डियों की मात्र 20 प्रतिशत कम हो जाती है। बाद में लगभग 65 वर्ष की उम्र में स्त्री पुरुष दोनों में ऑस्टियोपोरोसिस की प्रगति एक जैसी होने लगती है। अधिकांश मामलों में इस बीमारी का पता हल्की चोट के कारण फ्रेक्चर हो जाने के बाद ही लग पाता है। इसीलिए इस रोग को साइलेंट किलर कहा गया है। यह रोग बढ़ती उम्र के अलावा भोजन में अपर्याप्त विटामिन, मिनरल, प्रोटीन, वसा व कार्बोहाइड्रेट की कमी एवं अन्य बीमारियों के कारण भी हो सकता है।

ऑस्टियोपोरोसिस के कारण 65 की उम्र के बाद Fragility Fracture की संभावना बढ़ जाती है। हल्की-फुल्की चोट के कारण होने वाली हड्डियों की भंगुरता को Fragility Fracture कहते हैं। हड्डियों में यह टूटन अधिकांशतः कूल्हे, रीढ़, कलाई व कंधे में होती है। ऐसे फ्रेक्चर को ठीक होने में पर्याप्त समय लग जाता है। यदि मरीज किसी अन्य गंभीर बीमारी से ग्रसित हो तो रिकवरी कठिन हो जाती है।

प्रसिद्ध मुहावरा है कि परहेज इलाज से अच्छा है। और कि पहला सुख निरोगी काया। 30 से 35 वर्ष की आयु तक हड्डियों का अधिकतम विकास होता है। अतः बचपन से ही संतुलित आहार, प्रतिदिन व्यायाम, खेल आदि हड्डियों को मजबूत बनाते हैं जिससे आगे जाकर ऑस्टियोपोरोसिस की संभावना बहुत कम रह जाती है। नियमित व्यायाम, प्रतिदिन 30 से 35 मिनट पैदल घूमना, समय पर सोना, 8 घंटे की नींद आपके शरीर को स्वस्थ और मानसिक संतुलन बनाए रखने के लिए बहुत आवश्यक है। यदि कोई बीमारी हो जाय तो तुरंत संबन्धित डॉक्टर से सलाह लेकर इलाज कराया जाना जरूरी है।

अंत में बुजुर्ग लोगों की खुशहाल ज़िंदगी के मूल मंत्र

1. ज़िंदगी 60 से आरंभ होती है। याद रखें; रिटायर नहीं, रि-टायर।
2. कभी न कहें कि मैं बूढ़ा हूँ।
3. आपका स्वस्थ्य आपकी सर्वोच्च प्राथमिकता है।
4. विटामिन M जरूरी। (M = Money)
5. बचा हुआ समय बेहद मूल्यवान है।
6. परिवर्तन स्वीकार करें।
7. खूब आनंदित रहें, स्वार्थ कम रखें।
8. मृत्यु से भयभीत न हों।

सभी के लिए स्वास्थ्य की शुभकामनाएँ।

डॉ.बी.एल.कुमार
सीनियर प्रोफेसर एवं हेड ऑफ अर्थोपेडिक डिपार्टमेन्ट
पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस, उमरडा, उदयपुर।

हम दीपावली क्यों मनाते हैं?

चरन शर्मा

(श्रीनाथजी की नगरी नाथद्वारा में जन्मे, पले-बढ़े चरण शर्मा अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त चित्रकार हैं। यह गर्व की बात है कि आप सेठ मथुरादास बिनानी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय के छात्र रह चुके हैं।)

हम दीपावली क्यों मनाते हैं ? इसका अधिकतर उत्तर मिलता है राम जी के वनवास से लौटने की ख़ुशी में।

सच है पर अधूरा।

अगर ऐसा ही है तो फिर हम सब दीपावली पर भगवान राम की पूजा क्यों नहीं करते? लक्ष्मी जी और गणेश भगवान की क्यों करते हैं?

सोच में पड़ गए न आप भी !

मैं अपनी जानकारी के अनुसार इसका उत्तर आप तक पहुँचाने का प्रयत्न कर रहा हूँ।

1. देवी लक्ष्मी जी का प्राकट्य:

देवी लक्ष्मी जी कार्तिक मास की अमावस्या के दिन समुद्र मंथन में से अवतार लेकर प्रकट हुई थीं।

2. भगवन विष्णु द्वारा लक्ष्मी जी को बचाना:

भगवन विष्णु ने आज ही के दिन अपने पांचवे अवतार, वामन अवतार में देवी लक्ष्मी को राजा बालि से मुक्त करवाया था।

3. नरकासुर वध कृष्ण द्वारा:

इस दिन भगवन कृष्ण ने राक्षसों के राजा नरकासुर का वध कर उसके चंगुल से 16000 औरतों को मुक्त करवाया था। इसी ख़ुशी में दीपावली का त्यौहार दो दिन तक मनाया गया। इसे विजय पर्व के नाम से भी जाना जाता है।

4. पांडवो की वापसी:

महाभारत के अनुसार कार्तिक अमावस्या को पांडव अपना 12 वर्ष का वनवास काट कर वापिस आये थे जो कि उन्हें द्यूत क्रीडा में कौरवों द्वारा हराये जाने के परिणाम स्वरूप मिला था। इस प्रकार उनके लौटने की खुशी में दीपावली मनाई गई।

5. राम जी की विजय:

रामायण के अनुसार ये चंद्रमा के कार्तिक मास की अमावस्या के नए दिन की शुरुआत थी जब भगवन राम, माता सीता और लक्ष्मण जी अयोध्या वापस लौटे थे। भगवान राम द्वारा रावण पर विजय पाने और उसका वध करके सकुशल लौट आने की खुशी में अयोध्यावासियों ने पूरे राज्य को इस प्रकार दीपमाला से प्रकाशित किया था जैसा आजतक कभी भी नहीं हुआ था।

6. विक्रमादित्य का राजतिलक:

आज ही के दिन भारत के महान राजा विक्रमदित्य का राज्याभिषेक हुआ था। इसी कारण दीपावली अपने आप में एक ऐतिहासिक घटना भी है।

7. आर्य समाज के लिए प्रमुख दिन:

आज ही के दिन कार्तिक अमावस्या को एक महान व्यक्ति स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने हिंदुत्व का अस्तित्व बनाये रखने के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी।

8. जैन धर्म का एक महत्वपूर्ण दिन:

महावीर तीर्थंकर जी ने कार्तिक मास की अमावस्या के दिन ही मोक्ष प्राप्त किया था।

9. सिक्खों के लिए महत्त्व:

तीसरे सिक्ख गुरु अमरदास जी ने लाल पत्र दिवस के रूप में मनाया था जिसमें सभी श्रद्धालु गुरु से आशीर्वाद लेने पहुंचे थे और 1577 में अमृतसर में हरमंदिर साहिब का शिलान्यास किया गया था।

1619 में सिक्ख गुरु हरगोबिन्द जी को ग्वालियर के किले में 52 राजाओ के साथ मुक्त किया गया था जिन्हें मुगल बादशाह जहांगीर ने नजरबन्द किया हुआ था। इसे सिक्ख समाज बंदी छोड़ दिवस के रूप में भी जानते हैं। यह भी कार्तिक माह की अमावस्या ही थी।

10. द पोप का दीपावली पर भाषण:

1999 में पॉप जॉन पॉल 2 ने भारत में एक खास भाषण दिया था जिसमे चर्च को दीपावली के दीयों से सजाया गया था। पॉप के माथे पर तिलक लगाया गया था और उन्होंने दीपावली के संदर्भ में रोंगटे खड़े कर देने वाली बातें बताई।

भगवान् गणेश सभी देवो में प्रथम पूजनीय हैं इसी कारण उनकी देवी लक्ष्मी जी के साथ दीपावली पर पूजा होती है और बाकी सभी कारणों के लिए हम दीपमाला लगाकर दीपावली का त्यौहार मनाते हैं।

अब आपसे एक विनम्र निवेदन कि इस जानकारी को अपने परिवार व अपने बच्चों से जरूर साझा करें। ताकि उन्हें दीपावली के महत्त्व की पूरी जानकारी प्राप्त हो सके।

मूल मंत्र
ऐसे लें ज़िंदगी जीने का आनंद

*सफर का मजा लेना हो तो साथ में सामान कम रखिए, और
जिंदगी का मजा लेना हैं तो दिल में अरमान कम रखिए !!*

तजुर्बा है मेरा.... मिट्टी की पकड़ मजबूत होती है,

संगमरमर पर तो हमने .....पाँव फिसलते देखे हैं...!

*जिंदगी को इतना सिरियस लेने की जरूरत नहीं,
यहाँ से जिन्दा बचकर कोई नहीं जायेगा!*

*जिनके पास सिर्फ सिक्के थे वो मज़े से भीगते रहे बारिश में ,
जिनकी जेब में नोट थे वो छत तलाशते रह गए...*

*पैसा इन्सान को ऊपर ले जा सकता है;
लेकिन इन्सान पैसा ऊपर नहीं ले जा सकता.....*

*कमाई छोटी या बड़ी हो सकती है....
पर रोटी की साईज़ सब घर में एक जैसी ही होती है*

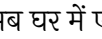

*इन्सान की चाहत है कि उड़ने को पर (पंख) मिले,
और परिंदे सोचते हैं कि रहने को घर मिले...

*कर्मों से ही पहचान होती है इंसानो की...

महेंगे कपडे तो पुतले भी पहनते है दुकानों में ..

आप सदेव स्वस्थ एवं मस्त रहे!

–संकलन: **महेश जैन**

साहित्य

लघुकथा: संत वाणी

माधव नागदा

पंडाल खचाखच भर चुका है। अलग-अलग ब्लॉक। हर ब्लॉक में एक टी.वी. ताकि संत छवि को समीप से निहारा जा सके। संत दूर व्यास पीठ पर विराजमान हैं। प्रवचन चल रहा है।

एक अधेड़ा हांफती-कांपती आती है और ऐन टी.वी. के सामने हाथ जोड़ बैठ जाती है।

"मीठा बोलो। दूसरों के लिए और कुछ न कर सको तो मीठा बोलो।" संत के श्रीमुख से मानो फूल झर रहे हैं।

अधेड़ा के कारण संत की छवि छिप जाती है। पीछे बैठा दर्शक श्रोता चिल्लाता है, "मां जी, यहां टी.वी. के सामने मत बैठो। उधर जाओ। हटो यहां से।"

रोचक प्रसंग छूटा जा रहा था। महिला टस से मस नहीं हुई।

"डोकरी, सुना नहीं क्या? हट यहां से।"

"हटकर कहां जाऊं? तुम्हीं जगह बता दो।"

"जगह चाहिए तो जल्दी मरा करो ना।"

उधर पंडाल में संत वाणी गूंज रही थी, "और कुछ न कर सको तो मीठा बोलो। मीठी वाणी अमृत तुल्य होती है।"

लघुकथा: बिग बॉस

माधव नागदा

रामबाबू को बॉस दो बार अपने कमरे में बुला चुके हैं। वही सुहालका एण्ड सुहालका के टेण्डर वाला मामला। बीस कम हैं तो क्या। प्रताप एण्ड सन्स को किसी तरह रिजेक्ट कर दो। बहुत से दांव-पेंच हैं। आप से पहले वाले एकाउंटेंट श्यामबाबू करते ही थे। कोई बाल तक बांका नहीं कर सका। और सुनो। जब दुबारा बुलावा आया तो साहब ने संकेत कर ही दिया। सुर को जरा धीमा करके बोले,पहुँची हुई पार्टी है। करोड़पति। एक पेटी का ऑफर दिया है। आधी तुम्हारी। बस! खुश! फिर ठहाका लगाते हुए कहा, 'रामजी,सब कर रहे हैं आजकल। सरकार कानून बनाने वाली है कि रिश्वत देना अपराध नहीं होगा। देना अपराध नहीं तो लेना कैसे हो गया? समझ गये न? इसलिए बेधड़क रहो और अभी का अभी फाइनल कर दो।'

रामबाबू चुपचाप अपनी सीट पर आकर बैठ गये। बैठे रहे। अपने आप में डूबे हुऐ से। एकाएक उन्होंने सुहालका वाली फाइल एक तरफ पटक दी और प्रताप एण्ड सन्स को पास कर ठप्पे लगाने लगे। जोर-जोर से। इतने में रोड़ीलाल ने आकर कहा, "रामबाबूजी, बॉस ने पुछवाया है कि उन्होंने जो काम कहा वह हो गया क्या?"

"नहीं हुआ रोड़ीलाल। बॉस को कहना कि बिग बॉस ने मना कर दिया है।"

रोड़ीलाल नासमझ की तरह खड़ा रहा। फिर हिम्मत बटोरकर सवाल किया, "रामबाबूजी, ये बिग बॉस कौन है? कहां है इसका ऑफिस?"

"बिग बॉस हम सबके भीतर रहता है रोड़ीलाल। हरदम चिल्लाता रहता है कि यह ठीक है, यह गलत है। मगर आजकल उसकी सुनता कौन है।" रामबाबू ने दार्शनिक अंदाज में कहा, "खैर तुम नहीं समझोगे। यह फाइल लेते जाओ। साहब की टेबल पर पटक देना।"

रोड़ीलाल जाते-जाते ठिठक गया। कहने लगा, "मैं सब समझ गया। मेरा बिग बॉस कहता है कि आप सच्चे आदमी हो।"

लघुकथा: अतिथि कबूतर

राम पटवा

(सुप्रसिद्ध लघुकथाकार। प्रस्तुत लघुकथा उनकी कालजयी रचना)

रोज सुबह एक छत पर दो कबूतर मिला करते थे। दोनों में घनिष्ठ मित्रता हो गई थी। एक दिन दूर खेत में दोनों दाना चुग रहे थे, उसी समय एक तीसरा कबूतर उनके पास आया और बोला-"मैं अपने साथियों से बिछुड गया हूँ कृपया आप मेरी मदद करें ।"

दोनों कबूतरों ने आपस में गुटरूं- गूं किया, भटका हुआ अतिथि है...

अतिथि देवो भवः .....लेकिन प्रश्न खडा हुआ कि यह अतिथि रूकेगा किसके यहाँ ? दोनों कबूतर अलग-अलग जगह रहते थे, एक मस्जिद के मीनार पर तो दूसरा मंदिर के कंगूरे पर । अंततः यह तय हुआ कि अतिथि कबूतर को दोनों कबूतरों के साथ एक-एक दिन रूकना पडेगा।

तीसरे दिन अतिथि की भावभीनी विदाई हुई। दोनों मित्र अतिथि को दूर तक छोडने गये। शाम को जब वे लौटे तो देखा कि मंदिर और मस्जिद के कबूतरों में अकल्पनीय लडाई हो रही है। इस दृश्य से दोनों स्तब्ध रह गये।

बाद में पता चला कि अतिथि कबूतर संसद के गुंबद से आया था।

राम पटवा
एन-3, "साकेत"
बसन्त पार्क कॉलोनी, महावीर नगर
रायपुर, छत्तीसगढ-492006

फुलझड़ियाँ

शेर का बच्चा

विक्की स्कूल जाते हुए रोने लगा तो उसके पिताजी बोले, 'चुप हो जा बेटा। शेर का बच्चा कहीं रोता है ?'

विक्की- शेर का बच्चा स्कूल भी तो नहीं जाता है।

पैसा

पत्नी- सुनो, आजकल बेटा पैसे बहुत उड़ाने लगा है। जहाँ भी छिपाती हूँ, ढूंढ निकालता है।

पति- उसकी किताबों में छिपा दे, कभी नहीं ढूंढ पाएगा।

कौन मरा ?

चंदूलाल किसी काम से बाजार जा रहे थे। रास्ते में एक शवयात्रा देखकर उन्होंने सामने से जल्दी-जल्दी आ रहे पूरनमल को रोककर पूछा, 'कौन मरा ?'

पूरनमल- जिस आदमी को अरथी से बांध रखा है वो मरा।

जादू

पापा- गप्पू, क्या बात है, तेरी माँ आज एकदम चुप कैसे बैठी है ?

गप्पू- पापा ! अब और दुखी मत करो। माँ मेरे कारण ही चुप है।

पापा(खुशी से)- अच्छा ! ऐसा तूने क्या जादू कर दिया ?

गप्पू- माँ ने मुझे लिपस्टिक लाने भेजा था, मैं गलती से फेविस्टिक ले आया।

कैंची

राहुल मम्मी से- मम्मी जरा तुम्हारी जीभ से ये रस्सी तो काट दो प्लीज।

मम्मी- पागल हो गया है क्या, जीभ से भी कोई काट सकता है ?

राहुल- परंतु पापा तो कह रहे थे कि तेरी मम्मी की जीभ कैंची की तरह चलती है।

रिश्तेदार

एक कैदी दूसरे से– क्या बात है, तेरे से कोई मिलने नहीं आता। कोई रिश्तेदार नहीं हैं क्या?

दूसरा कैदी- रिश्तेदार तो बहुत हैं परंतु सारे जेल में बंद हैं।

420

गीता- दुनिया में कैसे-कैसे 420 लोग भरे पड़े हैं।

रीता- क्यों, क्या हुआ ?

गीता- आज सुबह-सुबह दूध वाला हिसाब करते समय मुझे दो सौ रुपये का नकली नोट पकड़ा गया।

रीता- अच्छा ! कहाँ है वो नकली नोट दिखाओ तो।

गीता- वो तो मैंने सब्जी खरीदते समय सब्जी वाले को चेप दिया।

गुणी लड़की

एक परिवार लड़के के लिए लड़की देखने गया। लड़का भी साथ में था। लड़की की माँ प्रशंसा करने लगी-मेरी बेटी की जबान कोयल जैसी है, गर्दन मोरनी जैसी है, चाल हिरणी जैसी है, स्वभाव गाय जैसा है।

इस पर लड़का बोला- आपकी बेटी में कुछ इंसान जैसा भी है ?

पागल

पत्नी- अगर मैं आपको छोड़कर चली जाऊँ तो आप क्या करोगे ?

पति- पागल हो जाऊंगा।

पत्नी- मतलब, दूसरी शादी तो नहीं करोगे ?

पति- पागल तो कुछ भी कर सकता है।

ईमानदार

चंदूलाल- इस दुनिया में केवल पान विक्रेता ही ईमानदार होता है।

पूरनमल- कैसे ?

चंदूलाल- जो मुझे पूछकर चूना लगाता है, बाकी सब तो बिना पूछे ही चूना लगा देते हैं।

अभी आया हूँ

एक आदमी तीसरी मंजिल से गिर पड़ा। जब उसे होश आया तो भीड़ जमा देखी।

क्या हुआ ? किसी ने पूछा।

आदमी बोला- मुझे क्या पता, मैं तो अभी-अभी यहाँ आया हूँ।

ए फॉर एप्पल

अध्यापक- पिंटू बोल, ए फॉर एप्पल।

पिंटू (धीरे से)- ए फॉर एप्पल।

अध्यापक- ज़ोर से बोलो।

पिंटू- जय माता दी।

पापा को नहीं जानते हो

अध्यापक ने पिंटू से सवाल पूछा- मान लो तुम्हारे पापा ने मुझसे पचास हजार रुपये लिए तो एक साल बाद दस प्रतिशत के हिसाब से तुम मुझे कितने रुपए वापस दोगे ?

पिंटू- एक पैसा भी नहीं।

अध्यापक- इसका मतलब तुम गणित नहीं जानते हो।

पिंटू- मैं तो गणित जनता हूँ लेकिन आप मेरे पापा को नहीं जानते हो।

नई परिभाषा

अखिल नागदा

(*जन्म 22 मई 1979, लालमादड़ी, नाथद्वारा। सेठ मथुरादास बिनानी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय के पूर्व छात्र (1996 से 1999)। ग्रेजुएशन यहीं से किया। शिक्षा- B.Sc.,B.Ed., PGDCA, M.A. इतिहास (स्वयंपाठी) प्रथम श्रेणी।*)

खिड़की से बाहर देखा तो अभी भी अच्छी खासी धूप थी, जबकि घड़ी में चार बज चुके थे। बाहर गली में कुछ बच्चे क्रिकेट खेल रहे थे। मेरा बेटा अभिज्ञ भी उनके साथ ही था। हालांकि अभी वो सात साल का ही है, लेकिन उसके हाव-भाव खेलते वक्त पूर्ण क्रिकेटर की तरह ही थे। वो खेलने में मगन था। मैंने उसे दो-तीन बार पुकारा भी था कि बहुत खेल लिए अन्दर आजाओ पर उसने "अभी आया" कहकर बात अनसुनी कर दी। धर्मपत्नी कमरे में ही थी। सब्जी काटते हुए वह अपने रिश्तेदारों के बारे में बात कर रही थी। और मैं बीच–बीच में हाँ–हूँ कर रहा था। वार्तालाप में ये रिश्तेदारों वाला टॉपिक मेरे लिये सबसे ज्यादा नीरस होता था और श्रीमती जी के लिए सबसे रसपूर्ण। सीधे संवाद से बचने के लिये मैंने T.V. चालू कर दिया। T.V. पर कोई खास प्रोग्राम तो नहीं आ रहा था, लेकिन मैंने ऐसा जाहिर नहीं होने दिया। मैंने चहरे पर गहरी दिलचस्पी के भाव लेकर T.V. में अपनी आँखे गढ़ा दी। पर ये सब कारगर साबित नहीं हुआ।

"अगले महीने की 27 तारीख शादी पक्की हुई है, अभी से बता देती हूँ।" धर्मपत्नी ने कहा।

"किसकी ?"

"किसकी क्या। इतनी देर से मैं क्या बक-बक कर रही हूँ जब। गरिमा की और किसकी।" पत्नी जरा गुस्से में बोली जो वाजिब था।

"गरिमा ! अच्छा तुम्हारी मौसी की लड़की, वो छोटी वाली।"

"चलो तुम्हें याद तो है। वो ही सब तो तुम्हें बता रही थी। पता है छोटी वाली की पहले शादी हो रही है। इसमें भला माँ – बाप भी बेचारे क्या करे। बड़ी के चक्कर में छोटी को कब तक बिठाए रखें।"

पत्नी को पूरा विश्वास था की मै इस विषय में थोड़ी दिलचस्पी जरूर लूँगा। बड़ी बैठी है और छोटी की शादी हो रही है, ... विषय वाकई गंभीर था, साथ ही रहस्यपूर्ण भी, लेकिन मेरी इसके प्रति उदासीनता उसे अखरी। लगभग राज खोलने के अंदाज में उसने कहा, "अरे बड़ी का रंग थोडा गहरा है ना, अब आजकल के लड़के तो पहले खूबसूरती देखते है।"

"पर दिखने में तो लड़की बुरी नहीं, अच्छी भली दिखती है।" मैंने बात को काटा।

धर्मपत्नी को अब थोडा ठीक लगा, ठीक इसलिये क्योंकि मैं अब वार्तालाप में सक्रिय हो रहा था। मेरी भूमिका केवल हाँ–हूँ करने तक सीमित नहीं थी। उसने अपने खूबसूरती वाले तर्क को आगे बढाया, "अरे गरिमा के आगे कहाँ ठहरती है, कितना साफ़ रंग है उसका।"

मुझे भी मजाक सूझा। "अरे भाई रंग साफ़ तो तुम्हारा भी है, पर खूबसूरती वाली बात .....।" मेरी बात पूरी होने से पहले ही धर्मपत्नी जी ने काट दी। "देखो मै फालतू मजाक के मूड में नहीं हूँ, मै सिर्फ इतना कह रही हूँ कि शादी के वक्त तुम्हारे दूसरे प्रोग्राम होतो केंसिल ही रखना।"

मै कुछ जवाब देता कि तभी सात वर्ष का अभिज्ञ दौड़ता हुआ अन्दर आया। जिस तेजी से फाटक के खुलने की आवाज़ आई थी, मुझे लग गया कि ये वो ही है। धड धडाता हुआ अंदर आया, उसी दौरान चप्पले भी बेतरतीबी से खोलता हुआ, खोलता हुआ क्या, अपने पांवो से फेंकता हुआ सीधा कमरे में दाखिल हुआ। उस कमरे में जहाँ बड़ी अलमारी है और जिस पर आदम कद कांच भी लगा हुआ है। आया और कांच के सामने खड़ा हो गया। दोनों हाथ अलमारी पर टिका दिए और पूरा वजन हाथों पर डाल दिया। फिर तल्लीनता से खुद को निहारने लगा। मानों ये उसकी दिनचर्या ही बन गयी हो जैसे।

"क्या हुआ रे ?" मैंने थोडा डांटने के लहजे में पूछा। उसने कोई ख़ास ध्यान नहीं दिया। वो दर्पण निहारने में मगन था। थोड़ी देर बाद बोला – "पापा"

उसके पापा बोलने के कई तरीके है। जब वो पापा बोलकर थोड़ा रुकता है, फिर अपनी दोनों भौंहें ऊपर करके अपनी आँखों को ज्यादा फैलाता है और इस दौरान जब उसके होठों के दोनों कोने धीरे–धीरे फैलते हैं और उस मुस्कान के साथ जब वो कुछ पल ठहरकर मुझे देखता है तो मुझे लग जाता है कि कुछ पुराना वादा याद कराया जा रहा है। अभी भी वो ही भाव मुद्रा थी।

"आपको याद है, आपने एक प्रॉमिस किया हुआ है।" वो झिझकता हुआ बोला। मेरी शंका सही निकली। एक तो वो दूसरे बच्चों जैसे डिमांडिंग नहीं है और उस पर वो डिमांड भी इतनी अजीबोगरीब थी कि मुझे अपना किया प्रॉमिस जल्दी ही याद आ गया – एक चेहरा मेरे सामने उभरा। काला – डूट, जब हँसता है तो केवल दांत चमकते दिखते हैं। पूरे सिर पर खल्वाट और बीच में रंगे हुए बालों का मार्ग। वेस्टइंडीज क्रिकेट टीम का नामी खिलाडी – आंद्रे रसेल।

अभी हाल ही के कुछ वर्षो से आईपीएल नाम का एक तमाशा शुरू हुआ है – इन्डियन प्रीमियम लीग। क्रिकेट का लघु संस्करण। शुध्द मनोरंजन। दर्शकों के स्वादानुसार तैयार किया गया क्रिकेट

व्यंजन। तीन घंटे में नतीजा सामने। देश-विदेश के नामी–गिरामी खिलाड़ी नीलाम होते है। बोलियां लगती हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक दूसरे के कट्टर प्रतिद्वंदी एक ही टीम में खेलते हुए मिल जाएँगे। इस मंच पर सब गीले शिकवे दूर। भाई, करोडों जो मिलते हैं, फिर कैसी अनबन। और सब से मजेदार बात, टीम का नाम राजस्थान रॉयल्स और राजस्थान का एक भी खिलाड़ी टीम में नहीं।

खैर, तो हुआ यूँ था कि आईपीएल का चस्का अभिज्ञ को भी लगा। चस्का ऐसा कि एक मैच भी नहीं छोड़े। और कोलकत्ता नाईट राईडर्स का तो हरगिज नहीं। आंद्रे रसेल जो था उसमें।

"पापा, ये आंद्रे रसेल है। ये दोनों करता है– बेटिंग और बोलिंग। और वो, ...वो डिविलियर्स है, अफ्रीका का खिलाड़ी।" मैच देखते हुए एक दिन उसने स्क्रीन को अंगुली से लगभग छूते हुये कहा था। मुझे ताज्जुब हुआ। ये छोटा बच्चा इतना जल्दी सीख रहा है।

"आपको पता है मेरा फेवरिट प्लेयर कौन है पापा ?"

ओह ! तो इसका फेवरिट प्लेयर भी है। अभिज्ञ आँखे फाड़कर मेरी ओर उत्सुकता से देखने लगा। उसने जिस अंदाज से पूछा, उससे लगा, वो चाहता था कि मैं कुछ खिलाडियों के बारी–बारी से नाम लूँ और वो उनको एक–एक करके ख़ारिज करे, एक गेम की तरह, फिर अंत तक मै उस खिलाड़ी, उसके फेवरिट खिलाड़ी के नाम तक पहुंचुं। लेकिन मैं उस मूड में नहीं था। मैंने सीधे ही पूछ लिया–

"कौन है, तू ही बता दे।"

"आंद्रे रसेल, और आपका ?" उसने अपनी जगह पर उछलते हुए, हाथों को एक बॉलर की तरह घुमाते हुए वापस प्रश्न भी दाग दिया। मै क्या कहता। मै तो उसके ऑब्जरवेशन पर विस्मित था। खेलता तो आंद्रे रसेल वाकई जबरदस्त है, चीते सा फुर्तीला। फील्डिंग और बॉलिंग में लाजवाब, बल्लेबाज़ी भी ऐसी कि एक शॉट ताकत से लगा दे तो गेंद स्टेडियम से बाहर। लेकिन ये अकेला तो ऐसा नहीं है, और भी बहुत से खिलाड़ी हैं।

एक दिन मैच देखते हुए अभिज्ञ अचानक बोला था। वो ही भाव–भंगिमा।

"पापा ! एक प्रॉमिस करोगे ?"

प्रॉमिस मतलब कुछ डिमांड ही होगी। पूछ लिया– "हाँ बोलो, क्या चाहिए ?"

"चाहिए नहीं, मुझे किसी से मिलना है।"

"किससे ?"

"आंद्रे रसेल से। और मुझे आप वेस्टइंडीज भी ले जाओगे।" उसी बाँलिंग एक्शन के साथ उसने जवाब दिया।

ये कैसी मांग। एकदम अप्रत्याशित। अरे भाई हम भी बचपन से क्रिकेट के शौकीन रहे है। हम सब मतलब मेरे बचपन के सभी साथी– मनीष, अमित, भूपेश सब। मुझे अजहर पसंद था। मनीष को सचिन और भूपेश को अजय जड़ेजा। स्कूल में जब हम खेलते थे, मैं अजहर की तरह कॉलर ऊपर कर लेता था और एक कंधे को थोड़ा नीचे झुकाकर, अपनी दोनों कोहनियों को जरा मोड़ लेता था। ये बन गये मोहम्मद अजहरुद्दीन। लेकिन उस वक्त मेरे दिमाग में कभी ये बात नहीं आई कि मुझे अजहर से मिलना है। न कभी मनीष ने सचिन से मिलने की इच्छा जाहिर की न ही कभी भूपेश ने जड़ेजा से।

"अरे तुझे कोई खिलौना दिला दूंगा। क्या दिलाऊं बोलो ? रिमोट कंट्रोल कार ? " मैंने अपनी असक्षमता छुपा कर बेटे को बहलाने का प्रयास किया।

"नहीं कोई खिलौना नहीं चाहिए।" अभिज्ञ का निश्चय पक्का था। रिमोट कंट्रोल कार उसकी सबसे बड़ी कमजोरी है और उसे मनाने का मेरा सबसे बड़ा हथियार, लेकिन इस अचूक हथियार ने भी धोखा दे दिया। अपनी हैसियत मै नन्हें अभिज्ञ को कैसे समझाता और फिर ऐसी उटपटांग मांग कौन पूरी करे, इसलिए उसका मन रखने के लिए झूठमूठ ही कह दिया था– "देख अच्छी पढ़ाई करेगा तो कभी चलेंगे वेस्टइंडीज़, ठीक?" बेटा खुश हो गया और मै भी बात भूल गया। लेकिन आज इतने दिनों के बाद उसने अचानक मेरा वादा याद दिलाकर मुझे एक बार फिर आश्चर्य में डाल दिया।

"भूले तो नहीं पापा ?"

"अरे, याद है। पक्का।" मैंने जैसे उसे आश्वासन दिया।

बच्चों का भी क्या। कितने खिलाड़ी हैं देश-विदेश के। आस्ट्रेलिया और न्युज़िलैंड के दूध जैसे स्मिथ और मुक्कलम, इंग्लैंड के खिलाड़ी – एकदम लाल चेहरा लिए और अपना हीरो – विराट कोहली। एक से बढकर एक खिलाड़ी, और ये फेन है उस कालिये रसेल का।

अभिज्ञ वापिस दर्पण में निहारने लगा। फिर एक और अप्रत्याशित सी बात कानों से टकराई– "आजकल मै थोडा काला दिख रहा हूँ ना पापा।" वो दर्पण निहारते हुए, थोडा खुश होकर बोला। ओह ! तो जनाब इसलिए यहाँ खड़े रहते हैं। आज पता चला।

"हाँ, और नहीं तो, धूप में खेलेगा तो काला ही पड़ेगा।" उसकी मम्मी अपना काम छोड़कर उसे डांटती हुई सी कमरे में आई।

"तो पापा अगर मै रोज धूप में खेलूं तो मै भी काला हो जाऊंगा ना, मुझे भी काला दिखना है।" अभिज्ञ ने मम्मी की डांट को नजर अंदाज करते हुए कहा।

मै और पत्नी अवाक्। पूरा देश गोरा दिखने की जुगाड़ में है। गोरा मतलब सुंदर। ढेरों क्रीमें मार्केट में उपलब्ध है जो सात दिनों में गोरा, मतलब सुन्दर दिखने का दावा करती हैं, और ये महाशय काला होने की जुगाड़ में हैं।

"अरे पर तुझे काला क्यों दिखना है पागल।" उसकी माँ चिल्लाई। उसने अनसुना कर दिया। वो भागा, उसी तेजी से। वापस धूप में खेलने। ज़ोर से बोलते हुए –

"मुझे काला दिखना है। आंद्रे रसेल जैसा, और वेस्टइंडीज़ भी जाना है।"

मैं खुली फाटक को देखता रह गया। अभिज्ञ धूप में खेलने चला गया था– आंद्रे रसेल बनने। उसकी मम्मी मन ही मन बडबडाती हुई वापिस अपने काम में लग गई थी। मैं टी.वी. की तरफ मुड़ा। एक विज्ञापन चल रहा था। नायिका अपने सुन्दर गोरे चेहरे को स्पर्श कर रही थी। वह कह रही थी, "पंद्रह दिनों में लाए निखार, त्वचा को बनाये गोरा, खूबसूरत।"

फिर मैंने परदे पर देखा। नायिका का चेहरा धीरे–धीरे धुंधला हो रहा हैं – धुंधला और धुंधला। उसकी जगह एक नया चेहरा उभर रहा हैं, एक काला चेहरा। मैंने चेहरे को पहचाना – ये वही आंद्रे रसेल हैं। सुन्दरता की नई परिभाषा गढ़ता हुआ।

अखिल नागदा
अध्यापक, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, केलवा।
मो. 9829371281

कविता

"पिछवाई"

डॉ.वंदना जोशी

(हिन्दी व राजस्थानी की कवि, कथाकार डॉ.वंदना जोशी इसी महाविद्यालय में व्याख्याता, चित्रकला के पद पर कार्यरत हैं। आपकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकीं हैं। मूल निवास चित्तौड़।)

नाथद्वारा की बनी पिछवाई
नगर नगर, डगर डगर
घूम आई, शहर शहर
लूट लाई वाह वाही

इसके चित्रण में समाई
बिच बिच माधव, द्वै द्वै गोपी,
वैष्णवों के जनमानस में
इसने अपनीं जगह बनाई।
विविध शैलियां ज्यों
आकर मिल गई है
पतित पावनी गंगा में
और बन गई एक
नाथद्वारा शैली विशेष
तब कहलाई विश्वविख्यात
यह पिछवाई।
यहां के चतारों व सुथारों को
महाराणाओं और तिलकायत महाराज का
मिला संरक्षण
निखरी कला साधना,
पारम्परिक स्वरुप ग्रहण कर
बन गई पिछवाई।

श्रीनाथ जी की लीला
कलाकारों ने इसमें बनाई
वल्लभाचार्य जी ने
श्री विग्रह के पीछे
इसे धराई, तब
पीछे लगने के कारण
यह पिछवाई कहलाई।
बूंदी शैली का मौसमी रुप
किशनगढ़ शैली का प्रभाव
अन्तराल,वरिम विन्यास
और स्वरूप देवगढ़ का
उदयपुर शैली का समूह चित्रण
लेकर जयपुर शैली से
आलंकारिक प्रवृत्ति में
बन गई शैली पिछवाई।

मेवाड़ की उपशैली में
नाथद्वारा चित्रशैली ने
पिछवाई चित्रण से
विशिष्ट जगह बनाई
महाराणा राजसिंह की
स्थाई सुरक्षा में
श्रीनाथजी की मूरत से
नाथद्वारीय संस्कृति व
कला चेतना ने
अद्भूत कृति चित्रण कर
पिछवाई बनाई।
मंगला, श्रृंगार, ग्वाल, राजभोग
उत्थापन, भोग, आरती और
शयन सभी तो समाहित

किए हैं अपने में
चित्रित पिछवाई।
नित्य दर्शन, विविध श्रंगार
तथा वर्ष भर के उत्सव हजार परंपरा का मूल भाव लिए
आनंद विभोर, निर्धारित माप तोल की
पुष्टिमार्गीय वैष्णव जन ने
खोज टटोल कर,
बनवाली पिछवाई।
आध्यात्मिक स्वरूप में आकर्षक, भावात्मक, मोहक
राधा-कृष्ण की लीलाओं की,
पुष्टि सृष्टि के आराध्य
सेव्य स्वरूप में
विधि निधि ठाकुर जी की
यहां बनती आई
कई वर्षों से पिछवाई।
राज, भोग और श्रंगार के सांस्कृतिक विकास में
कलाओं के सौंदर्य से
परिपूर्ण भक्ति रस धारा में
आध्यात्मिक, कलात्मक, मंगलप्रद
सांस्कृतिक दर्शन कराती
नाथद्वारा की पिछवाई।
प्राणियों की मधुर मयी मुद्राएं, आकृतियां लोक भावना प्रधान और
प्रेम विरह कामभावना झलकाती
रेखाओं की सरलता, सुदृढ़ता, मिश्रित रंगों की
आकर्षक चमक
प्राचीन अर्वाचीन विशिष्टता लिए
यमुना मध्य कमल और
कदम, केल, करील कुंज में
गाय मोर चकोर
गोवर्धन गिरी धरे
श्रीनाथजी की सुंदर

बनी पिछवाई।
नगर नगर, डगर डगर
घूम आई, देश विदेश शहर
लूट लाई, वाह वाही
बिच बिच माधव, द्वै द्वै गोपी
इसके चित्रण में समाई
वैष्णवों के जनमानस में पिछवाई ने
अपनी जगह बनाई।

मात्र एक ज्योति

विनीता श्रीवास्तव

अनिश्चितताओं के महासागर में
अमावस्या की स्याह कालिमा भी
पल-पल सकुचाती खामोशी
क्षण-क्षण गहराती उदासी
क्यों करती है मुझसे अनगिनत प्रश्न
है अनुत्तरित असमंजित सकपकाती

अपनी ही सोच के दायरे में बंधित
आशा व निराशा में झूलती किंचित
नवीन आयामों को पाने की धुन में
और ऊंचाइयों को छूने की आशा में
यूं ही बढ़ती जाती हूँ ...
निरंतर, कटिबद्ध, स्थिर

किन्तु पाती हूँ प्रश्नों के ढेर तो
आज भी वैसे ही हैं अनुत्तरित...
शायद इसलिए कि भविष्य है अनिश्चित
और
वक्त की धारा बहती है विरुद्ध

फिर मेरे अस्तित्व की सार्थकता ?
ज्योति की भाँति
जलकर एक निश्चित समय तक
करना है मुझे आलोकित
समय के निरंतर गतिशील पथ को
दुनिया के बीहड़ को
जीवन के इस जंगल को

विनीता श्रीवास्तव
सह आचार्य, से.म.बि. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नाथद्वारा

चित्र वीथी

टेराकोटा कार्यशाला में बाएँ से श्री महेश जैन, श्री शंकर मालवीय, श्री माधव नागदा, श्री राजेन्द्र प्रजापत (टेराकोटा कलाकार), डॉ. मोनिका रोत, डॉ.वंदना जोशी (एकदम दाएँ)

बिनानी महाविद्यालय के पूर्व छात्र श्री नेमाराम राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित|
उपराष्ट्रपति श्री वेंकैया नायडू सम्मानित करते हुए।
मूलतः सुमेरपुर निवासी नेमाराम स्थानीय महाविद्यालय से चित्रकला में एम.ए. हैं।
वे आज सुप्रसिद्ध मूर्ति शिल्पकार हैं। राष्ट्रीय स्तर पर कई एकल व समूह प्रदर्शनियाँ आयोजित

नेमाराम के मूर्तिशिल्प का अवलोकन करते प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी

समाचारों में टेराकोटा कार्यशाला

कार्यशाला में विद्यार्थियों ने बनाई कलाकृतियां

नाथद्वारा। टेराकोटा कार्यशाला में विद्यार्थियों ने मिट्टी से निर्मित किए गए मूर्तिशिल्प।

राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त टेराकोटा कलाकार श्री राजेन्द्र प्रजापत का स्वागत करते माधव नागदा

एल्युमिनी बिनानी समिति सदस्य

शंकर मालवीय
जन्म: 3.12.1949
शिक्षा: एम.ए.बी.एड.
मूल गाँव सलोदा (खमनोर)
सेवानिवृत्त आर.ए.एस. (2007)
मोब-9414682533
संप्रति: शोभागपुरा, उदयपुर

डॉ.बी.एल.कुमार
सुप्रसिद्ध अस्थिरोग विशेषज्ञ
पेसिफिक इंस्टीट्यूट उदयपुर में
सीनियर प्रोफेसर एवं हेड ऑफ
अर्थोपेडिक डिपार्टमेन्ट
मोब-9414157678

डॉ.दीपक सेठी
जन्म: 6.7.1972
जनरल एवं लेक्रोस्कोपिक सर्जन
मूलतः नाथद्वारा निवासी
संप्रति:प्रमुख विशेषज्ञ सर्जरी विभाग,
आर एन टी मेडिकल कॉलेज एवं
एम.बी. चिकित्सालय, उदयपुर
मोब-9414248134

डॉ. वंदना जोशी
जन्म: 13.7.1971
मूलतः चित्तौड़ निवासी
स्थानीय महाविद्यालय में सह आचार्य
चित्रकला
कवि, कहानीकार एवं चित्रकार
मोब-9414735308

गोवर्धन लाल मीणा
जन्म: 7.5.1952
मूल निवास: नाथूवास (नाथद्वारा)
सेवा निवृत्त पुलिस अधीक्षक
राष्ट्रपति पुलिस पदक से सम्मानित
संप्रति: प्रतापगढ़
मोब- 9414357655

घनश्याम वागरेचा
जन्म: नाथद्वारा
वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक
मोब-9414074561

सुशील पालीवाल

जन्म: 20.9.1960
मूलतः नाथद्वारा
FMCG कंपनी में मैनेजर मार्केटिंग
बी.ए.अंग्रेजी,चित्रकला,संस्कृत
संप्रति: सेक्टर 4, उदयपुर
मोब- 9414168072

डॉ. युगलकिशोर शर्मा

जन्म: 20.6.1959, नाथद्वारा
प्रसिद्ध चित्रकार
कई पुरस्कारों से सम्मानित
पूर्व सह आचार्य चित्रकला
स्थानीय महाविद्यालय से सेवानिवृत्त
मोब-9414757667

चरन शर्मा

जन्म: 31.12.1950, नाथद्वारा
अंतराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त चित्रकार
कई पुरस्कारों से सम्मानित
संप्रति: मुंबई कार्यक्षेत्र
मोब-9820433629

शिव सिंह डुलावत

जन्म: 5 जुलाई 1956
सेवानिवृत एसोसिएट प्रोफेसर
रसायन विज्ञान
संप्रति-शारदा नगर, बोहरा गणेश,
उदयपुर
मोब-7014637360

हीरानंद आसवानी

जन्म: 14.11.1965
रेलवे से ट्रेन मैनेजर के पद से
सेवानिवृत्त
वर्तमान में उदयपुर निवास

डॉ. सुभाष मेहता

जन्म: 8.10.1951, नाथद्वारा
प्रतिष्ठित चित्रकार, कई एकल व
समूह चित्र प्रदर्शनियाँ आयोजित
लेखक एवं कला समीक्षक
कई पत्र-पत्रिकाओं में आलेख
प्रकाशित
संप्रति:फ्रीलान्स आर्टिस्ट
उदयपुर

डॉ. चन्द्रशेखर शर्मा

जन्म: स्थान नाथद्वारा
पिता:प्रो.ललितशंकर शर्मा
सुप्रसिद्ध इतिहासविद्
कई शोध पत्र एवं पुस्तकें प्रकाशित
दर्जनों संस्थाओं से सम्मानित
सह आचार्य इतिहास विभाग,
रा.मीरा कन्या महाविद्यालय
उदयपुर

सुरेशचन्द्र पँवार

जन्म: 18.1.1967
मूल निवास नाथद्वारा
संप्रति: जीवन बीमा निगम, कोटा में
विकास अधिकारी
मोब-9829036582

चतरलाल सोमानी

जन्म: 8.9.1954
मूल निवास-नाथद्वारा
संप्रति: सरदारपुरा, उदयपुर
मोब-8949940614

भँवर सिंह राठौड़

जन्म: 8.12.1950
बामणियावेर (नाथद्वारा)
वरिष्ठ अधीक्षण अधिकारी
नेशनल सेंपल सर्वे ऑफिस
भारत सरकार से सेवानिवृत्त
संप्रति-भूवाणा, उदयपुर
मोब- 9024948647

डॉ. जुझारु हुसैन बोहरा

जन्म: 12.10.1963
एसोसिएट प्रोफेसर (रसायन)
दो पुस्तकें विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम में
लागू
विषय विशेषज्ञ RPSC

ज्योत्सना सनाढ्य

जन्म: 17.9.1976, नाथद्वारा
संप्रति: शिक्षा विभाग में अध्यापक
मोब- 9782107422

महेशचन्द्र जैन

जन्म: 14.12.1953, नाथद्वारा
व्यवसाय-महारानी सारीज, उदयपुर
मोब-9799311594

लक्ष्मणगिरि गोस्वामी

जन्म: 7.4.1969
मूल निवास: नाथद्वारा
प्रधानाचार्य
प्रशासनिक क्षेत्र में कई पुरस्कार
मोब-8426075755

माधव नागदा

जन्म: 20.12.1951, लालमादड़ी
एम.एससी.रसायन, बी.एड.
साहित्य लेखन में प्रवृत्त
सत्रह पुस्तकें प्रकाशित
संप्रति: लालमादड़ी निवास
मोब-9829588494

डॉ. नवनीतप्रिया शर्मा

पिता प्रो. ललितशंकर शर्मा
शोध निदेशिका, कई शोध आलेख
एवं तीन पुस्तकें प्रकाशित
संप्रति: सह आचार्य (हिन्दी)
मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर

प्रेम कपूर

जन्म: 24.9.1949, नाथद्वारा
सेवानिवृत्त S.O.
मोहनलाल सुखाडिया विश्व
विद्यालय, उदयपुर
संप्रति:शोभागपुरा, उदयपुर
मोब-9829010721

प्रदीप सेठी

मूलतःनाथद्वारा निवासी
पूणे में एक सॉफ्टवेअर कंपनी में
सीनियर मैनेजर
मोब-8888837808

ललित प्रकाश शर्मा

जन्म: 7.9.1955
मुख्य कार्यकारी अधिकारी
अरबन को-ऑपेरेटिव बैंक से
सेवानिवृत्त
संप्रति:बड़गांव, उदयपुर
मोब-9414170682

नेमाराम

जन्म: 17.2.1985, सुमेरपुर
मूर्ति शिल्प में निष्णात
राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित
संप्रति:सुमेरपुर में कला साधना
मोब-9829497956

अशोक पारिख

श्रीनाथजी इंस्टिट्यूड ऑफ
टेक्नोलोजी एंड इंजीनीयरिंग के
संस्थापक
सुप्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता एवं
भामाशाह।
नाथद्वारा निवास
मोब-9829096561

श्यामसुंदर गिरनारा

जन्म:30.1.1955, नाथद्वारा
रुचि: धर्म, अध्यात्म
मोब-7073354681

स्थाई सदस्य एल्युमिनी बिनानी

1. युगल किशोर शर्मा
2. बिन्दु कटारिया
3. शिव सिंह दुलावत
4. प्रदीप पालीवाल
5. चरन शर्मा
6. शंकर मालवीय
7. भंवर सिंह राठौड़
8. सुभाष मेहता
9. पुष्कर लाल सोनी
10. इन्द्र सिंह राव
11. महेन्द्रसिंह गोरवा
12. मुरलीधर कनेरिया (स्व.)
13. लोकेश पालीवाल
14. बी एल सुथार
15. ललित प्रकाश शर्मा
16. देवकीनंदन गुर्जर
17. चन्द्रशेखर शर्मा
18. सुन्दर लाल मांडावत
19. लक्ष्मण गिरि गोस्वामी
20. माधव लाल नागदा
21. नाना लाल जैन
22. सुरेश पंवार
23. मोहनसिंह चौहान
24. वन्दना जोशी
25. घनश्याम वागरेचा
26. राहुल गूर्जर
27. सूर्य प्रताप सिंह चुंडावत
28. सुशील पालीवाल
29. किशन लाल कनेरिया
30. भंवर लाल बोल्या जैन
31. बाबूलाल हींगड़
32. प्रतीक कुमावत
33. हरिसिंह भाटी
34. गिरिराज सिंह जादव
35. जुगल किशोर छापरवाल
36. नवनीत प्रिया शर्मा
37. धर्मेश कुमार जैन (स्व.)
38. राकेश स्वर्णकार
39. महेशचंद्र जैन
40. जुझारू हुसैन बोहरा
41. रतन सिंह राव
42. प्रकाश कुमावत
43. चित्र लाल सोमानी
44. हीरानन्द आसवानी
45. ताह राज एस ओ तसद्दुक हुसैन
46. गोपाल लखारा
47. राज शर्मा
48. ऋतु गूर्जर
49. जागृति गूर्जर
50. संगीता गूर्जर
51. ज्योत्स्ना सनाढ्य

अस्थाई सदस्य एल्युमिनी

1. नीतू टांक
2. शंकर लुहार
3. माधुरी शर्मा
4. आशु सनाढ्य
5. भगवती जोशी
6. कपिल शर्मा
7. तृष्णा बाघेला
8. डिम्पल शर्मा
9. श्याम सुन्दर गिरनारा
10. हेमन्त चित्रकार
11. श्याम सुन्दर शर्मा
12. गिरिश पी शर्मा
13. योगेश कमाना
14. नेमाराम
15. राखी पालीवाल
16. रामचन्द्र शर्मा

बिनानी महाविद्यालय छात्र संघ कार्यकारिणी

सत्र: 2022-23

अध्यक्ष	सुनील कुमार जोशी
उपाध्यक्ष	मितवा चौहान
महासचिव	राहुल तंवर
संयुक्त सचिव	सुनीता चौहान
वित्त सचिव	यादवेन्द्र सिंह झाला
क्रीडा सचिव	उमंग जोशी
पुस्तकालय सचिव	धनवंतरी जोशी
सांस्कृतिक सचिव	इशिका माली
अनुशासन सचिव	रुद्र प्रताप सिंह झाला

कार्यकारिणी एल्युमिनी बिनानी समिति

संरक्षक

डॉ. करुणा जोशी, प्राचार्य

अध्यक्ष

श्री शंकर मालवीय

उपाध्यक्ष

डॉ.बी.एल.कुमार

सचिव

डॉ. वंदना जोशी

कोषाध्यक्ष

श्री घनश्याम वागरेचा

सदस्य

श्री अशोक पारिख

सदस्य

श्री माधव नागदा

सदस्य
श्री लक्षमण गिरि गोस्वामी

सदस्य
श्री सुशील पालीवाल

सदस्य
डॉ. युगल शर्मा

सदस्य
श्री गोवर्धन लाल मीणा

सदस्य
श्री महेशचन्द्र जैन

जो हमसे बिछुड़ गए

मुरलीधर कनेरिया

डॉ. धर्मेश जैन